श्री रामदेवबाबा सार्वजनिक समिती, नागपूर-१३

"प्रगट गये खुद विष्णूजी श्री रामदेव के नामसेल

रचयीता-संकलनकर्ता-लेखक
पं. राजेंद्रकुमार ब. शर्मा (प्रधान पुजारी)

श्री रामदेवबाबा मंदीर, काटोल रोड,
मु.पो.जि. नागपूर (महाराष्ट्र).

मो.न. ९४२२१६७०९१, ९८९०६४५८४५, ९८२३९८३३७६

(विष्णुजी की अवतार भुमी राजस्थान तॅवर वंश मेघराज की बेटी डालीबाई, भक्तप्रवर हरजीभाटी, रामाग्रज बिरमदेव, बहन सुगणा और लांछा सचमुच भाग्यशाली है जो आज सारा संसार उनका गुणगान कर रहा है। मरुधर भुमि के कल्पवृक्ष तुल्य, विश्व के स्वामी दया के सागर, रुणीचा नगरीके महेन्द्र राजा अजमल के सुखदाता प्रसिध्द वंदनीय दिनबन्धु भगवान रामदेव शुध्द हृदय मे विहार करनेवाले, भैरव और भवभय के शत्रु, असुरोपर नियंत्रण रखनेवाले साधु तथा सज्जनों के हितैषी, मैनादे के लाल भगवान श्री रामदेवजी की जय हो माता मैणादे के मानस सरोवर के राजहंस, तॅवर वंश विभुषण, दैत्य भैरव को मारनेवाले रुणीचा के राजा अलौकीक सौंदर्यशाली हे रामदेव मै आपको नमन करता हुँ। मान्यता है इस बात की के रामदेवजी की कृपा पात्र भक्त के आगे विघ्न, विरोधी, विशाद, प्रमाद आदि अन्य सभी बाधाएं स्वयं शांत हो जाती है तथा रामदेवजीकी कृपा हो तो गली ग्रांव का उपेक्षीत व्यक्ति भी प्रतिस्ठित बन जाता है। वैकुंठ के सुख को छोडकर लक्ष्मी के मनोरथ लावण्य को विश की तरह मानकर तथा फुलो की सेज को कबेर वज्र की तरह मानते हुए अबकी बार मरुधर में अवतार लेकर आपने सभी को कृतार्थ किया है)

पं. राजेंद्रकुमार ब. शर्मा (प्रधान पुजारी)

श्री रामदेवबाबा मंदीर, काटोल रोड, मु.पो.जि.
नागपूर (महाराष्ट्र).

मो.न. ९४२२१६७०९१, ९८९०६४५८४५,
९८२३९८३३७६

।। श्री रामदेव रामायण प्रथमोध्याय प्रारंभ ।।
बोलो द्वारिकानाथ की जय

(विश्वभर में प्रसिध्द राजा तुंगध्वज के वंशज तॅवर वंश शिरोमणी राजा अनंगपाल द्वितीय दिल्ली के तख्तोताज पर बिराजमान थे जो बडे ही वीर पराकमी बलवान कहलाये। इनको कोई बेटा नही था, दो बेटीयॉ थी। बडी का नाम था कमला, छोटी का नाम था सुंदरी। कमला का विवाह अजमेर के राजा सोमेश्वर चव्हान से हुआ। छोटी का विवाह हुआ कन्नौज के राजकुमार विजयचंद राठोड से। राजाने अपने भाई राव रणसींजी को साथ लेकर राजपाट चलाया, कुछ वर्ष बाद अपने भाई से कहा कि अपना जीवन इसी तरह राजपाट में चला जायेगा, सोचता हुँ कुछ दिन अपने कुलदेवता भगवान श्री द्वारिकाधीश के सानिध्य मे द्वारिका जाकर बिताँ। किन्तु उन्हे कोई बेटा नही था और भाई के बेटे उम्र में छोटे थे आखिरकार दोनो भाई ने आपस में सलाह मशवरा कर अपनी बेटीके बेटे (यानी दोयते को) पृथ्वीराज चौहान को सौंप कर कहा हम दानो भाई अपने बच्चो संग द्वारिका जा रहे है और पृथ्वीराज चव्हान से कहा हम सब द्वरिकाधीश के दर्शन को जा रहे राजपाट आप संभालना और द्वारिका रवाना हुअे कुछ वर्ष बाद दिल्ली आये नगर के पहले सरुवर किनारे डेरा डाल दुत भेजकर संदेशा भिजवाया तो पृथ्वीराज चव्हान मिलने आये, कहने लगे नानाजी वापस क्यों आये वहांसे और कहा अब आपकी भुजाओंमे वो बल नही है जो मुगलोंसे लोहा ले सके तब नियत में खोट देखकर राजा अनंगपालजी के भाई रावरणसींजी के बेटोंने विरोध किया. संगी साथी लाव लश्कर दास दासी राजा अनंगपाल एवं राव रणसीजी बेटोंको संग ले कर राजस्थान में नरेणा

पहुंचे वहां उन्होने अपना डेरा डाला उसके पश्चात पुष्कर से ५२ कि.मी. दूर पुर्व दिशा में जो आज भी तॅवरोंकी वाटी के नामसे जाना जाता है उस चावण्डीया नामक क्षेत्र मे डेरा डाला)

5 तॅवर गोत्र है रामदेवजीका तथा रामदेव गायत्री मंत्र है
ष अजमल सुताय विदमहे रामदेवाय धिमही तन्नो तॅवर प्रचोदयातष

(वहॉ मुगलोंसे हुई लढाई में रणसीजी के ६ बेटे शहीद हो गये। २ बेटे बचे, एक अजमलजी, दुसरे धनरुपजी, राजा अनंगपाल यह सदमा बर्दास्त नही कर सके, स्वर्ग सिधार गये। पश्चात राव रणसीजी अपने बेटोंको लेकर मरुधर भुमी आये और बाडमेर से आगे पोकरण की पुर्वोत्तर पहाडीयोंमे अपना डेरा डाला और अपना राजपाट करने लगे। राजपाट बढीया चलने लगा राजा अजमालजी की विरता दयालुता के चर्चे दुरतक हुए जिसे सुनकर अजमलजी का विवाह जैसलमेर के राजा अभयसींहजी भाटी की बेंटी मैणादे से वैशाख शुक्ल तीज के दिन हुआ और धनरुपजीका विवाह सुमित्रा के संग कार्तीक शुक्ल पंचमी को हुआ। कुछ वर्ष बीते परन्तु दुर्भाग्य से अजमलजी के कोई संतान नही हुई। धनरुपजीको २ बेटीयॉ हुई, बडी का नाम सुगणाबाई, छोटी लाछाबाई। सबकुछ ठिक चल रहा था। भगवत प्रेमी धनरुपजी को राजपाट से मोह नही था, सो घर छोडकर निकल गये। सदा साधु संतो की संगत करते नगर नगर अलख जगाते आखीर मण्डीमीयालामें मारवाड जंक्शन के पास उन्होने समाधी ले ली, जहॉ आज भी मेला लगता है। रानी सुमित्रादेवी भी चल बसी तो रानी मैणादेने लाछा सुगणा को अपनी बेटीयों की तरह पाला पोसा। दिन बीते राते बीती, परमात्माको कुछ और ही मंजुर था। एक समय ऐसा आया की सारे रेगिस्थान में अभुतपुर्व भीषण अकाल पडा। न भुतो न भविष्यंति। अकाल ने विकराल रुप धारणकर लीया, तो अजमलजीने वरुणयज्ञ करवाया। भगवान इंद्रदेव प्रसन्न हुए तो फलस्वरुप चारों ओर काली घटायें छाने लगी बादल गहराने लगे, बिजलीयॉ कडकने लगी। सारी रात जमकर पानी नजर आने लगा, नदी नाले तालाब भर भर के बहने लगे। चहुँ ओर हरियाली छाने लगी, पॅछी चहचहाने लगे। सभी किसान प्रसन्नचीत होकर बीजवाई का सामान, हल बैल लेकर, बीबी बच्चोंको संगलेकर खेतोंमे जाने की तय्यारी करने लगे और निकलपडे अपने खेतोंकी ओर। मीठे मीठे गीत गाते गुनगुनाते किसान जा रहे थे अजमालजी ने सोचा मै भी इनकी

खुशी मे शामील हो जाऊं ।तैयार होकर घोडेपर राजा अजमल जी निकले, महल से राजा आते देख सारे किसान रुक गये और खेतोंमे जाने की बजाय वापस अपने घरोंकी ओर जाने लगे तो किसानों को ऐसा करते देख राजाने किसानोंके मुखिया जिसका नाम था करसा, उसे आवाज दी “करसा अरे ओ करसाब्ब्ल। सारे किसान शीश झुकायें खडे हो गये, तब राजा अजमलजी ने किसानोंके पास पहुँचकर किसानो के मुखिया से कहा इतनी सुंदर बारीश हुआी खेतों में जाने की बजाय घर में क्यों जा रहे हो। राजा की जीद के आगे हार गया करसा कहने लगा राजासाहब आप बडे दयालु है, इसलिये आपका मन दुखाना नही चाहता हुँ। हम बडी उमंग के साथ अपने खेतों में जा रहे थे किन्तु ऐसे शुभ कार्य में जाते समय आपका सामने मिलना अपशकुन बन गया। राजन आप अच्छे हो किन्तु आपके कोई बच्चा नही। निपुत्रीक हो, निसंतान हो, बांझ का किसी बेऔलाद का शुभकार्य में जाते मिलना अपशकुन कहलाता है। इसलिये खेतोंमे जाने की बजाय हम अपने घरोकी ओर लौट रहे है। राजा के कलेजेमे तीर की तरह बात चुभ गयी, बेहद पिडा हुई, निराश हो गये विचार करने लगे, आँखो में आँसु बहने लगे। उदास चेहरा आँखे नम रोते देख महल में पहुंचे तो राजा को रानी ने पुछा स्वामी मैने कभी आपके चेहरे पर हँसी के सीवाय कुछ नही देखा आज ये क्या हुआ आपको। सबकुछ सुनकर रो पडे महाराज कहने लगेल रानी मै अपने आपको बडा खुशकिस्मत समझता था किन्तु आज समझ में आया कितनी बडी कमी है मेरे जीवन में, न जाने कौन जनम के पाप है जो मै भोग रहा हुँ। मेरे शगुन तक नही मनाते लोग, रोते हुओ कहने लगे मेरे जिवन में औलाद की कमी आज महसूस हो रही है । बडे दुखी हुओ सोच सोच कर तो आदर्श नारी का परिचय देते ढाडस बंधाते, धिर बंधाते रानी ने कहा स्वामी इतनी सी बात के लिये इस छोटे से दुःख के लिये इतनी बडी बात सोचली आपने?क्या यह दुःख इस पृथ्वीपर बस आपको ही है?क्या जगमें और कोई बे औलाद नही है?क्या हर कोई अपना जिवन समाप्त कर लेता है?और कहा प्राणनाथ मेरी बात मानो तो आप एक बार द्वारिका जाकर आये तब राजा ने दास दासी नौकर चाकर के साथ अपने उडुकामेर के महल से द्वारिका पुरी तक एक ही काम किया पुरे रास्ते में और कहने लगे गोपाला गोपाला रे प्यारे नंदलाला, ओ बांसूरीवाला
जयजयकार करते पहुचे द्वारिका। स्नानादि से निवृत्त

होकर आरती का थाल, प्रसादी लेकर मंदिर पहुँचे। हर कोई दर्शन कर आनंदीत हुआ, आरती की तथा आरती कर अजमलजीने अद्रभुत अलौकीक श्रृंगार से सजे भगवान से कहा है द्वारिकाधीश नंदलाल प्रभु मै बडी दुर से आया हुं मेरी बात सुन लिजीये और भगवान से बाते करने लगे। आरती के पश्चात प्रसाद लेकर सभी भक्तगण चल दिये किन्तु अजमलजी प्रसाद का थाल हाथ में धरे वही पर खडे एक टकनिहार रहे कृश्णमुरारी को मनमे करुणा का भाव लिये ऑखोमे ऑसु भरके विनम्रता से पुछने लगे। मैने ऐसा कौन सा पाप किया जिस कारण मुझे संतान नही हुअी प्रभु मै आपके लिये प्रसाद लेकर आया हुं मुझसे बात किजीये। किंतु फिर भी कुछ नही बोले तो खिझते हुअे झल्लाहट से हाथ की प्रसादी फेंककर मारी कन्हैय्या के मुंहपे और बोले अब मेरे जिवन में कुछ नही रखालडडु जब मुंहपर सिरपर लगे ते सारा श्रृंगार, मुरली मुकुट, मोरपंखी, सब नीचे गीर गई तो पुजारी दौड कर हाथ पकडते है और कहॉ इतने बंचे कुल घराने के सज्जन आदमी हो और हरकत ऐसी करते हो क्या ये आपको शोभा देता है। तोअजमलजी ने कहा मै जबसे इन्हे कह रहा हुं बात करो तो बात करने को तैयार नही। तब पुजारी ने कहा अरे भाई इतना कहना ही नही पडता अगर प्यार से बुलाओ वहां झट से चले आते मेरे श्याम। लेकिन यहां अभी है ही नही प्रभु तो कैसे बात करेंगे। बताईये मै आपसे बात कर रहा हुँ ना क्योंकी मै मंदीर में हुँ। इतनी गरमी पड रही प्रभु आराम कर रहे चलो मिलवाता हुँ और समुद्र के किनारी टिले पर खडा कर दिया राजा को और कहा देखो भगवान विश्णु स्वयं तुम्हे बुला रहे है अजमालजी ने भाव भरे दिल से दर्शन किये, चरणो मे शीश रखना चाहा तो गीर पडे समुंदर में नाना तरह के जीव जंतुओ के देखते गर्भ में जा पहुँचे। वहॉ पहुचकर देखा एक विशाल चमचमाता महल उपर ध्वजा लहरा रही, सामने दो द्वारपाल खडे दिखे। नजदीक जाकर पुछा क्याद्वारकाधीश यही रहते है। जबाब मिला हॉ तो उन्होने कहा मुझे उनसे मिलना है तब द्वारपालने मना कर दिया तो बिनती करते हुए कहने लगे द्वारपालोऽऽमै द्वारिकाधीश के दर्शन करना चाहता हुं। अजमालजी की आवाज सुनकर भगवान दौडते हुये आये अजमालजीने चरणो मे शीश रखा फिर नैनो से निहारा तो भगवान के माथे पर पटटी बंधी देखी तो पुछा प्रभु आपको चोट कैसे आयी तो भगवान ने कहा आपही ने तो द्वारिका में लडडु फेंक मारा था। मै तो हर जगह विद्यमान हुं अजमाल जी

ने क्षमा मांगी। और प्रभु ने दान मांगने को कहा तो राजा बोले

"करता बिनती सुनो दयालु बचन मुझे दो दे देना।
मैणादे की कोख हरी कर घरमें आप ही आजाना।
भैरव ने आतंक मचाया ब्सका तुम संहार करो।
द्वारे आया है खुद अजमल प्रभुजी मुझपर दया करो।
भव ऽ सागर ऽ से पार लगाओ मुझको दिनानाथ
शरण पडा मै आन तुम्हारी जोडुं दानो हाथल

(प्रभु ने तुरंत कहा तथास्तु- हे अजमल मैणादे की कोख से सुंदर पुत्र बसंत पंचमी को शेशावतार जन्म लेगा। मै जन्म लेकर नहीं प्रगट होकर अंशरुप घर आकर पालने के प्रगट हुँगा, दो फुल झुलेमें रख देना। भक्तजन के कश्ट हरुंगा। अमल डाबलीरतन कटोरा, कमल पुश्प घर पुजा में रखे। पालने में रख नाम जप पुजन करना। जिस दिन आसमान में दुज का चांद रहे आंगन में कुमकुम पग दिखे, परींडे मे पानी के घडे दुध से भरे मीले समझना मै केशरवृश्टी, शंखध्वनी के बीच पधारुंगा। अजमलजी प्रसन्न हुअे। प्रभु शेश शय्या पर बिराजमान हुए, लक्श्मी पांव दबा रही, सुर,नर,बंधर्व, किन्नर गायन कर रहे थे। प्रभु कृपा से अजमलजी समुद्र के पृश्टतल पर आये और महल में पहुंचकर अजमालजीने सारा वृत्तांत सुनाया और अपने महल में पहुंचनेके नव महिने पश्चात घर में मैणादे की कोख से वसंत पंचमी को एक पुत्र रत्न जन्म लिया, खुशीया मनायी गयी फिर अजमालजीने सोचा दुसरी इच्छा प्रभु जल्द ही पुरी करेंगे। दिन रात भजन करते प्रभु का नाम स्मरण करते अजमलजी की भक्ती देख कृश्ण हैरान- रुकमणी पुछे चिंता से कहां की तैयारी-गरुडजीबोले प्रभु मेरा कैसा। मुझे भी साथ लेकर चलो प्रभुने कहा समय रहते मै तुम्हे बुलाबंगा। प्रभु की कृपा देख दिनरात आंठो प्रहर प्रभुनाम स्मरण किया गोविंद बोलो हरि गोपाल बोलो राधा रमण हरी गोविंद बोलो जनता जनार्दन को हर सांझ ढले बुलाकर कृश्णमहिमा सुनाते। भजन गाते, किर्तन करते, गुणगाण करते। फलस्वरुप ठिक ६ माह पश्चात एक दिन मैणादे रानी अपने कुंवर बीरमदेव को पलने मे सुलाकर कामकाज कर रही थी के बीरमदेव की जोर जोर से रोने की आवाज आई। संध्या की गोधुनी बेला थी, दौडकर गई तो देखाकी पालने मे बीरमदेव की बगल मे एक नन्हा मुन्ना मोटीमोटी ऑखोवाला घुंगराले बालोवाला माथे तिलक लगाये एक बालक लेटा मंद मंद मुस्कुरा रहा तो जोर से चिल्लाई ओडजी। अजमलजी दौडते आये देखा सारे आंगण मे कुंकुम पगचिन्ह देख

हर्षाये ता केशरवृस्टी होने लगी। शंख, ध्वनी हो रही थी। पलने में देखा तो नंदकिशोर के दर्शन हुए। मैणादे बोली मेरे घर एक ही बच्चे ने जन्म लिया फिर ये दुसरा बच्चा कौन हैअजमलजी दौडते हुए परींडे के पास गये तो देखा पानी के घडे दुध से भरे थे। सारे चिन्ह स्मृतीयोंको प्रभु वचनों को याद करके कहने लगे- आज चंद्रदर्शन भादवा सुदी दुज शके १३२७ संवत १४६१ शुक्लपक्ष वार शनिवार रानी ऽऽ भगवान द्वारिकाधीश खुद अपने घर आये है, सारे नगर में मिठाई बांटी गयी जन्मनक्षत्रादि अनुसार नाम रखा "रामदेवल तुलाराशी कन्यालग्न। खबर चारो ओर फैली तो वो भी आगये जो हर घर घर में पहुँच जाते है (किन्नर) कहने लगे ऐ रानी-ऐ राजा जरा ईंहा तो आओ एक दिन घर आंगन सुना था आज एक नही दो दो बेटे तेरी गोद में खेल रहे, बधाई मांगी। रामदेवजी को पालने में लिटाया हर कोई दर्शन लेकर झुले की डोर खिंचता छत्तीस प्रकार के व्यंजन बने, छप्पन प्रकार के भोग धरे। हर कोई मिठा मुंहकरता झुमता, नाचता, गाता बाबा नंद की तरह अजमलजी मुस्कुराते हर किसीको झुले की डोर सौंपते तो झुला झुलाते और अजमलजी ने कहा भाई सुनोऽऽ सुनोऽऽ सुनोऽऽ बधाई सारा भगतानं, मिठाई बांटो भगतानां, म्हारे घर प्रगटया गोपाल बधाई बांटो भगतांन कुछ दिन बीते एक दिन माता मैणादे ने रामदेव को बीरमदेव को तयार किया, लाड प्यार किया। बीरमदेव सो गये। रामदेवजी रोने लगे, तो हाथ में धरा दुध का चरु चुल्हे पर धर दीया और रामदेव को गोद में बिठा लिया, सोच रही की ये भगवान विश्णु के अवतार है। ऐसी क्या खास बात है इसमें, मुझे तो बीरमदे रामदेव में कोई अन्तर नही दिखता। मन में संशय आया और ये बात रामदेवजी ने जान ली और सोचा अगर मेरी मॉ को ही मुझपर भरोसा नही तो ये संसार कैसे विश्वास करेगा। इतने में दुध का चरु चुल्हे पर धरा उफनने लगा। मैणादेकी इच्छा हुअी इस बालक को निचे रख दुध उतार ती हुँ मॉ ने देखा रामदेवजीने गोद मे लेटे लेटे दोनो हाथ बढाकर दुध का उफनता गर्म चरु उठाकर रख दिया। पुनः अपनी माया समेटली। मॉ ने देखा आठो अंगुलियोँ मे दुध की गर्म मलाइ लगी थी, लाल हो गई अंगलियों को मुहं मे चुसकर ठंडा किया तो सारा ब्रम्हांड मैणादे को नजर आने लगा साक्षात विश्णु के दर्श हुअे मैणादे को और मुंख चुमने लगी, सारी शक्ति बम्हांड की मानो ऑखो मे समा गई और जान गई मेरा संदेह व्यर्थ था। फिर क्या था दिनरात आठो प्रहर रामदेव की

सेवा में लग गये। राजा अजमलजी और रानी मैणादे बाललीलायें देख देखकर प्रसन्न होते थे। कुछ माह बीते, शाम का समय सुंदर गोधुली बेला थी। बीरमदे रामदेव दोनो खेल रहे, दासदासी ध्यान रखे हुओ। एकाएक रामदेवजी मैनादे की गोदमें बैठे मांकी उंगली पकडकर खडी कर छत की ओर इशारा करने लगे। तो मां ने सोचा चलो बच्चो को मैढीपर से घुमाकर लाँ। फिर क्या था हुकूम होते ही चौकी, गालीछा, दुध, माखन, मेवा, मिसरी लेकर दास दासी महल की छत पर पहुँचे। महल की छत पर बींचो बीच चौकी बिछाई गयी, गालीचा लगवाया। मैणादे बिराजी, गोदमें दोनो लाल बैठे, थोडी देर लाड प्यार किया। मुख चूम रही रामदेवका, के रामदेव खडे होकर महल की छत पर बनी मुंडेर की कंगुरे में से देखा एक घुडसवार बडी तेजी से महल की ओर आ रहा था। रामदवजीने अंगुली से इशारा करते हुओ माता मैणादे से कहा एं माई घोडा महल के चारो ओर चक्कर लगा रहा, रामदेवजी चपलतासे दुसरी ओर जाकर पुनः अंगुली से घुडसवार की ओर दर्शाते कहते एं माई एं माई । माँ समझ गई मेरे बेटे को घोडा चाहिये। तभी रामदेवजी ने बडे प्यार से अपनी माँ मैणादे से कहा एं माई मुझे एक घोडा चाहिये जिद करने लगे माँ समझ गई माँ ने कहा बेटा थोडा बडा तो होजा, तेरे लिये जोधपुर से बुलवाबंगी सफेद झकास घोडा। थोडा बडा हो जा, पर रामदेवजी नहीं माने, जीद करते जैसे रात बिती फिरसे निंद खुलतेही न दुध न चाय ना बिस्किट खायी, फिर वही जीद माताऽ ए माताऽ म्हानं घोडलियो दिवाओऽ फिर माँ ने कहा थोडे दिन तो रुकजा पर रामदवजी कहां मानते। नहीं मुझे अभी अभी अभ्भी होना, जा मै आज कुछ नहीं खाबंगा, पीबंगा, रुस गये। फिर क्या था ऐसी कौनसी माँ है जो अपने बच्चे को रुठा देखे। मैणादे ने रुपा दरजी को बुलवाकर कहा एक घोडा बनवाकर लाओ। रुपा ने कहा रानीसा आप ऐसी बात करती हो जैसे मै घरका धनी हुँ। अरे कपडे का घोडा तो रामदेव को भा जाएगा। पर क्या घोडा ऐसे ही बनेगा क्या। दो थान लागसी कपडा दो थान तो रानी ने कहा जितना कपडा लगता है दिया जाय हुक्म की तामील हुई, कपडे के दो थान लेने गई दासी रुपा ने कहा बाईसा थोडी चाय, दुध तो प्याओ। रानी बोली पेली घोडो सिमार ल्याओ पाछं सुंटकाळी मींर्च गेरं चोखा दुध की चाय प्याबं। दासी ने दो थान थमाये कंधे पर डाल सीधे घर गया। घर के दरवाजे की कुंडी जोर जोर से बजाने लगा। धर्मपत्नी दौडते आई तो कंधे का बोझ उसकी ओर

करते कहने लगा ले पकड पकड पकड। पत्नी ने चालीस मिटर कपडे का थान कंधे से उतार नीचे रखा, दरवाजा बंद कर रुपा ने अपनी पत्नी से कहा जितनी कतरन घरमें पडी है बेकार का कपडा पडा है सब ले आआ रुपा दरजी ने संजासंवार कर घोडा सीरपे रख महल में प्रवेश किया और आवाज दी। खम्मा घणी ओ रानीसाड ओ बाईसा खम्मा घणी । रानी राह देख रही थी क्योंकी रामदेव आकर रुसकर बैठे थे। रानी ने दासी का कहा रुपा को पांच आने देकर चाय पिलाओ, रुपाने कहा नही बाईसा पुरा १६ आना ल्युंगो, बताओ थे म्हानं सिरफ कपडो दियो हो हं बाकी सामान म्हारे पास रो गेर दियों हुकम करो बाईसा मेरे पास जितना सामान था सब लगाकर लाया हुं मोती की लडी रेशम की डोरी भी लगाया हुं रानी बोली ठीक हं भाई सोला आणा दो, केशर को दुध प्याओ, सुंठ कालीमिर्च, चाय भी प्याओ और दासी लेकर तुरंत आई, रुपा चाय पीने लगा इतने में रामा दौडते आये घोडे को देख उछलने लगे। खुश होने लगे, जाकर गोदमें बैठे मॉंने लाड लडाया, मुख चुमा और रामदेवजी ने उठकर घोडे के पास जा उसकी लगाम खींची तो घोडा हिनहिनाया और घोडे को दोनो लात लताडते देख हिनहिनाते देखा। तो रुपा के हाथोंमे चाय की प्याली लडखडाने लगी। हाथ थर्राने लगे झट निचे रख खडा हो गया मानो कोई सांप सुंघ गया हो। दास दासी, नौकर चाकर मैणादे माता दंग रह गई और देखा रामदेव जैसे ही घोडेपर बैठे तो सबने कहा हे भगवान ये क्या हुआ रामदेव को जाते देख अजमलजी ने आवाज लगाई अरे ओ रामदेव तुरंत राजबैदय को बुलवाया नाडी देख औशधी पिलाई कहा सदमा पहुँचा है, देर लगेगी, नाडी जगहापर आते शाम से रात हुअी। रात के ११ बजे तब होश आया ऑंखे खोली मैणादे ने देखा सभी चुपचाप खडे और जैसे ही रुपाको देखा तो कहने लगी इस दरजी को रामदेव के आने तक काल कोठडी में रखा जाय सेनापती ने कहा रुपा अगर रामाराज कुंवर को तेरा बनाया हुआ घोडा वापस नही लाया तो कल सुरज उगतेही तुझे फांसी पर लटकायाा जायेगा । रुपा के मन मे चिंता हुअी बारबार सेनापती के शब्द कानों में गुंज रहे

थे दिन उगतां ही फांसी होवेंगी सोच ले ऽ बीरांअब क्या था रुपा की सीटटी पिटटी गुम हो गई, सोचने लगा मै समझता बडे घर की बडी बांते भगवान कही अवतार भी लेते थोडे ही होंगे। लेकिन आज जान गया ये कोई साधारण बालक नहीं सचमुच विश्णु के अंशावतार है। आज माना हुं,

सोचने लगा कि क्या किया जाय, कैसे बचा जाय उधर महल के रोते बिलखते रहे राजा अजमलजी माता मैणादे, नौकर चाकरों की निंद उड गई। रुपा दरजी काल कोठरी में सब सुन रहा और सोच रहा की अगर रामाराज नहीं आये तो मेरा क्या होगा । इस कालकोठरी से मुझे कौन मुक्त करायेगा । मन ही मन आपनी करनीपर पछताने लगा की मैने बदमाशी की बेईमानी की जो प्रभु को रास नहीं आई। चोरी की मैने- झुठ बोला हे प्रभु क्षमा करो हे द्वारिकानाथ विश्णु के अंशावतारी रामदेव वापस आजाओ, प्रभु मेरे प्राणोंकी रक्षा करो, दयालु और सच्चे मनसे आवाज लगाई, पुकार लगाई रामा को)

हेलो सुण्यो रुपा ऽ दरजी को छोडयो सारा काम
आगया रुणीचा का राम आयो आयो रुणीचा को रामजील

(जैसे ही घोडे की टाप सुनी सभीने देखा कपडे के घोडे पर सवार रामदेव सीधे कालकोठडी के पास गये, तो लोगो ने देखा चटक ताला टूट पडया , चटक पडी जंजीर रुपा न खुद मुक्त क-या सुगणाबाई रा बीर। रुपो न खुद दरवाजा खोला कोठडीका तो रुपा दरजी शरण में आ पडा। ऑखो ही ऑखो में बात हो गई, सब के साथ महल के रंगमंच मे आये। रामदेवने कहा भाई कोई जादुटोना नहीं जंतर मंतर नहीं अगर कोई करंदेव मेरे भगत पं तो याद राखजो कपडाको घोडो चढावं श्रध्दासु तो दुख दूर हो जासी। उस दिन से आज तक कोई भी दरजी बाबाको खीर का भोग लगाता है। रुणीचा के आसपास कोई दरजी कपउे का घोडा सीमाने के पैसे नही लेता। अगर किसी को कोई बाहरी बाधा ने घेर लीया हो, मस्तीश्क असंतुलीत हो तो उसपर से कपउे का घोडा बारकर बाबा के दरबार में चढाया जाता है। बाबा घोडे को दख कर प्रसन्न हुए थे। सो बाबाको प्रसन्न करने हेतु आज भी कई घोडे चढाये जाते है। विश्व का एकमात्र मंदिर है जहॉ श्रध्दा विश्वास से घोडे चढाये जाते है।) भैरव राक्षस का परचा

(कुछ वर्श बीते एक दिन पासही के सांतलमेर के कुछ लोग अजमालजी से बिनती करने आये की हम बेहद चिंतायुंक्त जीवन जी रहे है, कुछकिजीये। प्रभु भैरव नामक राक्षसने हमारा जीना हराम कर दिया है। मनुश्य देह रुपी राक्षस की पीडा का राज यह था कि एक समय पुरे मरुधर में पोकरण में कुछ गांव बसे थे। उन्ही पहाडीयोंमे एक आश्रम था, बालीनाथजी नामक ऋशी की तपस्या से राजस्थान जैसे प्रदेश मे भी उन्हीके आश्रमके इर्दगिर्द अनेक वृक्ष, पेड, पौधे लताऐं अपना सौंदर्य बिखेर रही थी। हिंसक जानवर भी पशु पक्षीयों के साथ

वैरभाव छोडकर आश्राम में टहलते रहते। ऋशीवर बालीनाथजी से अध्यात्म की उँचाईयो को छुने वाली साधना तप आदि के मार्गदर्शन हेतु कई भक्त एवं कन्याएं भी आती थी। एक दिन उसी पहाडीयों के पास ओढाणीयां गांव मे रहने वाला भैरवदासजी नामक अधेड उम्र का वैश्य आश्रम मे आया। शीवर सत्संग कर रहे अपने शिश्यों से कह रहे थे)

इन्सान अकेला ही आता और जायेगा
प्रभु का ही स्मरण करले वर्ना पछतायेगा

जीसे अपना समझता तु वो साथ नही देगा
अपने कर्मो के फल तु खुद ही भोगेगा
अच्छा सा कर्म करले जो साथ मे जायेगा,
गुरुभक्ति मे है शक्ति, पहचानले पायेगा....

(सतसंग में विराम हुआ तो नजर पडी भैरवदासपर तो बुलाकर , उनको पास में बिठाया, हालचाल पुछा आनेका कारण पुछा। तो उस ने कहा गुरुवर मै आपसे दीक्षा लेना चाहता हुँ। अपना जीवन सफल बनाना चाहता हुँ। गुरुदेव ने कहा समय आनेपर आपको बुलवा लुंगा तब तक एक काम करो छह विकारोंमेसे कोई विकार हावी हो जाये तो मन को भटकने न देना उस विकार पर काबु पाना और कामकाज में जब भी समय मीले तो नाम स्मरण करना और कहा)

5 जहां सतसंग होती हो वहांपर नित्य जाओ तुम
अभी फुरसत नही कहकर ये मौका मत गवाओं तुम

जरा अनुभव तो कर देखो के क्या बदलाव आता है
कपट सब दुर हो जाता हृदय निर्मल हो जाता है
किसी संतसंगी के संग में थोडा जीवन बीताओ तुम

सुनो सतसंग करने की ना कोई उम्र होती है
अमरदिप है वे जिसकी कभी बुढती ना ज्योती है
उसी ज्योती से जीवन की आत्मज्योत जगाओ तुम

करके एकाग्र मनको तुम जरा सतसंग समझलेना
होके तल्लीन भावों के सुनहरे फुल चुनलेना
किसी सतसंग सागर में जरा ढुबकी लगाओ तुम

(जब ऐसा कर लोगे तो मै खुद तुम्हारे पास आऊंगा या तुम्हे बुलवा लूंगा

वैश्य अपनी जीद पर अडा रहा की बडी मुश्कील से मोह लोभ को छोडकर मेरा मन दिव्य विचारोंको ग्रहण करने लगा है। गुरुदेव संसार चक्र में पुनः ना फस जाऊं मुझपर दया करो

मुझे यहीं रहने दो । सभी साधकोने गुरुपुजा की तथा आरती करने जगी)

सत्यनाम बसा सत्य लोक में सुरता तारण की.....
दास तुम्हारे स्वामी आरती गावे
हरदम सबको प्यार दिलावे आशा तन्मय की....

(आरती पश्चात सभी चरणस्पर्श कर आशिर्वाद लेते, गुरुदेव मुरमुरे का प्रसाद देते। जयगुरु कहते बडा ही आनंदमय वातावरण था। वैश्य की जीद को द्रेख ऋशीवर ने कहा कुछ दिन संयमीत जीवन जीओ तत्पश्चात गुरुदिक्षा दुंगा। वैश्य आश्रम में ही रहने लगा। एक दिन गुरुदेव ने कहा कल मै तुम्हे अनुग्रह दुंगा। आरती में वैश्य की खुशी का ठिकाना न रहा गुरुदेव ब्रम्हमुहुर्त में उठ जाते स्नानादि से निवृत्त हो साधना करते। आश्रम का नियम था मुर्गे की पहली बांग के साथ सभी ब्रंमहचारीणीयां नित्यकर्म से निवृत्त हो जाती। पश्चात पुरुश साधक जाते क्योंकी जलाशय एकही था। आज मुझे गुरुमंत्र मिलेगा इस खुशी में वैश्य नियम को भुल गया। जल्दी ही उठकर जलाशय की ओर चल गया। सरोवर पहुंचा तो वातावरण अलग ही था, सरोवर में उन्मुक्त रुपसे सुंदरीया विचरण कर रही थी। कामवासना ने वेग पकडा उस अपुर्व सुंदरता को देख वैश्य स्वयं को रोक ना सका मन को काबु में नही रख पाया पाप का पिशाच उसे बारबार प्रवृत्त करने लगा। स्वाभाविक है आग और घास जब मिलते है तो कोई भी सुरक्षित नही रह सकता, दोनो की गर्मी से एक लपट उठती है और वही हुआ जो होना था। पुरुश अपने अपराध को छुपा सकता है पर नारी नही है। ब्रम्हचारिणी डर से कांप रही थी। शरणागत भांव से ऋशीवर के चरणों मे गीरपडी कहने लगी गुरुदेव मुझसे भुल हुयी ऑखोसे ऑसुओकी धाराएं बहने लगी। गुरुवर ने सिरपर प्यार से हाथ फिराया। मेरा कौमार्य नश्ट हो चुका है, गुरुदेव दया करो। गुरुदेव ने कहा पश्चाताप की आग से तुम्हारा पाप नश्ट हो चुका है और ऋशवर ने कमंडल से कुछ पानी पीने को दिया जिससे उदर का विकार धुल गया। ऋशी ने पुछा बेटी वह कौन था?जवाब में वैश्य कीओर इशारा करते ही कमल से पानी हाथों मे लेकर कुछ मंत्र कहे व कहा राक्षसी वृत्ती का कार्य करने से राक्षस ही बनेगा और जल वैश्य की ओर फेंकते ही उसका सारा शरिर जलने लगा । चरणोंमे पडा पर माफी नही मिली। उसका सारा शरीर लाल हो गया, मसुडे फुलने लगे। दांतोंमे विकृती आने लगी।सारे शरीर के बाल कांटे की तरह खडे हो गये और शरीर इतना विशालकाय हुआ की तन के कपडे फटकर निचे गीर गये, वह दहाडने लगा तब चरणोंमे गीर गया बालीनाथ जी ने कहा मेरा शिश्य ही तुम्हे इस तकलीफ से मुक्ती देगा। वही तेरी विपदा का अंत करेगा।

ऋशीवर ने सभी साधको को घर जाने कहा, सभी अपने अपने घर को विदा हो गये। राक्षस दहाडता हुआ शरीर की जलन मिटाने जंगलो की ओर भागा। ऋशीवर तपस्यारत हो गये, राक्षसने सोचा कोई आश्रम में आयेगा तभी तो शिश्य बनेगा, यह सोचकर आतंक मचा दिया । जो नर नारी,वृध्दा, बालक अपने कामकाज हेतु जंगल के आते खेती करते, लकडियां जोडकर बेचने ले जाते सभी को मार देता। बंजर कर दि सारी जमीन भैरव ने कुछ खाने को नही मिलता तो आदमीयों को मारकर खुन पी जाता। बालको को कच्चा ही खा जाता। अडोस पडोस के गांव मे भय बना रहता। एक विशेशता थी की सांझ ढलते ही क्षमायाचना हेतु आश्रमपर आकर क्षमा याचना करता। बालीनाथजीको बहोत दया आती किंतु संतवचन झुठे नही होते। प्रसिध्द हो गया था आतंकी भैरवराक्षस बारा बारा कोस तक मनुश्य तो क्या पंछी, पशु भी नही दिखते। उसके कहर से तंग आकर सांतलमेर के कुछ सज्जनों ने सोचा , सुना है उडुकामिर में अजमालजी के घर विश्णु भगवान स्वयं अवतारित हुअे है चलकर उन्ही को व्यथा सुनायेंगे। ऐसा सोच २५-३० नर नारी अजमालजी से मिलने आये और दरबार लगा था। रामाराज भी बगलमें बैठे थे। जयजयकार लगाई सभी ने और कहा हमारा दुख दुर करो. भैरव राक्षस की पिडा से हमे मुक्ती दिलाओ । अजमालजी ने कहा भगवान पर भरोसा रख आप अपने घर चले जाओ । दुसरे दिन रामदेवजी ने अपनी मां से कपडे का एक गेंद बनाकर मांगा और सभी किशोर साथीयोंके संग बीरमदेव, रामदेवजी घोडेपर सवार महल से दुर खेलने हेतु पहुंचे। पास ही घना जंगल था। थोडा खुला मैदान देख घोडे चरने को छोड खेल शुरु हुआ। शर्त यह रखी की गेंद अगर तय सीमा से दुर जायेंगी तो गेंद फेकनेवाला खुद जाकर लावेगा। लारी झोरी(धाबाधुबी) का खेल शुरु हुआ। सभी ने जोर आजमाया, रामदेवजी बचते रहे। जब उनके हाथेंमे गेंद आई तो दुर फेंकी जो सीधे बालीनाथजी के मठ में जा गीरी। जिसकी आवाज से ध्यान से ध्यान हटा और हर्शीत हुअे सभी ने खोजा किन्तु गेंद नही मिली, सब थक गये। कहने लगे रामदेवने फेंकी है वही लावेगा, सांझ ढल रही थी, घर जाने हेतु सभी कहने लगे तो बीरमदेवजी को कहा इन सभी को लेकर चले मै आता हुं। सभी चले गये । धीरे धीरे अंधेरा हुआ घरमें सभी चिंता करने लगे, उधर रामदेवजी मठ में पहुचे। बालीनाथजी साधनारत थे, आहट सुनतेही ऑखे खोले प्रभुका स्वरुप देखा बडे ही आनंदीत हुए और पुछने लगे- तुम कौन हो तुम्हारा रहना कहां है ?तुम्हारे माता पिता भाई बंधु कौन है ? तुम नही जानते यहां भैरव राक्षस का बडा आतंक है तुम वापस अपने घर जाओ। इतने में भैरव के दहाडने की

आवाज आयी तो बालीनाथजी ने रामदेवजी को कुटीया में छुपा दिया और गोदडी उढा दी। भैरव आकर सीधे कुटीया में गया, गोदडी खिंचने लगा पर उसका अंत नहीं पाया । थक हार कर भागने लगा तो बालीनाथजीने एक भाला रामदेवजी को देकर कहा इस दुस्ट का अंत करदो । रामदेवजी भैरव के पिछे पहाडी पर भागे और पकड कर एक शीला सरकाके गुंफा में बंद कर दिया । भैरव ने कहा प्रभु जी मै यहा भुका मर जाबंगा तो रामदेवजी ने कहा ग्यारस के दिन मुझे चढाया गया प्रसाद तुझे मिल जायेगा औा शीला सरका दी तथा वापस गुरु बालीनाथजी के पास जाकर आशिर्वाद लिया महल में पहुंचे तो रामदेवजी के आने की खुशीयां मनायी गयी)

ष रुणीचा नगर की स्थापना ष

(कुछ दिन बिते तो एक दिन आईने के सामने खडे अजमालजी अपने केश सफेद होते देखे तो मनमे विचार आये सो गुरुवर बालीनाथजी से मार्गदर्शन लेने की सोचे। तयारी हुअी फलफुल मेवा मीसरी से रथ लदवाया। नंगे पाव रथ मे बैठ पहुँचे मठ में देखा ऋशीवर मंदमद मुस्कुरा रहे। तो अजमालजी ने चरणस्पर्श कर कहा गुरुदेव अब मुझसे राजपाट चलाना नहीं होता मै अपनी बाकी उम्र प्रभु स्मरण में बिताना चाहता हुं कृपया मार्गदर्शन करे तो बालीनाथजी ने आज्ञा दी और कहा ष रामदेवजीने हिंसा रुपी घोर दानव भैरव का आतंक मिटाया उसी भुमि पर ऋणीचा नामक कुआ है। उसे अमरता प्रदान करते हुअे ऋणीचा नामकी नगरी बसाओ, गढ महल, भव्य प्रसाद बाग, उपवन, वाटीका, सरुवर का निर्माण कर धुमधाम से रामदेव का राजतिलक करे तथा अपना कार्यभार उन्हे सौंपकर प्रभुस्मरण -संकिर्तन में बची उमर बिताओ। हे राजन जहॉ राम का डेरा वहीं रामडेरा यानी रामदेवरा कह लायेगा और गौवंश के उत्थान हेतु सभी संभव उपाय करके पोकरण दिशा में गौशाला निर्माण कर बिरमदेवरा नामक गांव बसाओ वह काम वही करेगा और कहा इस बात की डुंडी पिटवादो जिसका पालन हुआ। अजमालजीने हर नगर मे डुंडी पिटवायी। सुनो सुनो सुनो खुशखबर सुनो

अजमलघर अवतारी, रुणीचा नरेश, संत तपस्वी रामा राजकुंवार का राज्याभिशेक कल गुरुवार संवत १४७३ पौश सुदी दशमी को प्रातः मंगलबेला में होने जा रहा है। सभी सादर आमंत्रित है। रुणीचा के राजाधिराज हेतु मैणादे के लाडले कुंअर रामाराजकुंअर- राजा रामदेवजी बनने जा रहे हैऽऽऽ

(रामदेवजी के राजतिलक की खबर पहुंची तो दुर दुर से नर नारी के जत्थे नंगे पाव निकल पडे। नाचते गाते झुमते

हुअे खुशी के मारे एक दुसरे की आवाज लगाते की चलो रामदेवरा दर्शन कर आवा गांव गांव से निकले झुंड एक दुसरे से मिलते मिलते विशाल रैली बनगयी सभी कहने लगे चलो रामदेवजी के दर्शन कर आये । लाखो नर नारी पहुँचे सुबह सरोवर में स्नान कर मंडप में पहुँचे । सभी ने जयजयकार लगाई बोलो सभी बोलो ऽ रामराजकंवार की जय। सभी ने देखा रामदेवजी को चौकीपर बिठाकर तिलक लगाया और सात नदी के जल से गौ दुध से रामदेवजी को स्नान कराया गया। मंगल गीत गाये गये । चारो धाम का जल मिलवाकर रसोई बनी जिसे मैणादे ने अपने हाथ से रामदेवजी को खिलाया सभी ने जै जै कार की भोजनादी के पश्चात बाबा को भोग लगाया गया तो देखा की सभी ने जयजयकार लगायी और कहा हे रामदेव हम सबकी एक अरजी सुनीये और कहा की हे प्रभु अब आप राजा रामदेव बने हो हम सब का कल्याण करो रामदेवजी ने सबकी सुनी और कहा की)

5रख मनमे विश्वास जो मेरे दरपे कभी आयेगा
वैसाही फल पायेगा जो जैसी नियत लायेगा
ध्यान रहे इस बातका के झुठ नही बोलना है
व्यापारी भी रखे ध्यान कभी कम नही तोलना है
मुख अरु पेट मे अन्तर रख घात नही कभी करना
चोरी चुगली चकारी त्याग के मधुर उचारण करना
माता पीता की जो ना करे सेवा - करे न सबसे प्रीत
उसके हाथ का अन्न ना खाना - अपनाओ यही रीत
जिवन मे होगी तुम्हारी जीत
स्वारथ की सब दुनियादारी-कोई न आता काम
जाना होगा एक दिन सबको - जपो राम का नाम
एकही इच्छा मेरी भी सुनलो सुनो सकल नर नारी

जब भी समय मीले तुम जपलो प्यारे मदनमुरारी

(सभी भक्तो ने आरती का थाल सजाया और कहा.)

5ओ राजा राम रुणीचेवाला, गलविच मोतीयन की माला
हाथ लिये हो भाला, भगतां का हो रखवाला, लीले

घोडलिये वाला

रिमझीम उतांरा थांकी आरती हो बाबा रिमझीम उतांरा थांकी आरती

(अंतीम चरण चला राज्याभिशेक का राजारामदेव ने उठकर सर्वप्रथम संतसतगुरु तपस्वी श्री बालीनाथजी को वंदन किया तो ऋशी बालीनाथजी बोले हे रामदेव वैकुंठ के सुख को छोडकर लक्ष्मी के मनोरथ लावण्य को विश की तरह मानकर तथा फुलो की सेज को कठोर वज्र की तरह मानते हुए अबकी बार मरुधर में अवतार लेकर आपने सभी को कृतार्थ किया है, श्रध्दाभक्ति विश्वास की त्रीवेणी मे गोता लगाया हुआ या फिर कोई भी दयाभावी पवित्र ठदय मानव रामदेव का कृपापात्र बन सकता है। वर्ण जाति, वर्ग विशेश पुजा परंपरा पर रुणीचा में कोई प्रतिबंध नही है)

मंडीयो रे सुगणारो ब्याव मंडीयो, बाई लाछा रो ब्याव मंडीयो

हुअी तयारी ब्यावरी रे गेर दियो हे मंडीयो रे मंडीयो सुगणा रो .....

पावणा पई आया ब्याव मं खुब बजी शहनाई

ब्याव मां आया गणपत सागं शिव गौरा संग नंदीयोर नंदीयो

नाचे कुदे लोग लुगाया मंगल गीत सुनावे

भेळा हुया जग सारा बरातीं नाचे कुदे छंदीयो रे छंदीयो

(दहेज के लिये पडिहारोने सुगणा को बहोत तकलीफ दी जुलम हुये तो रामदेवजीने सभी तंवरोको एकत्रीत कर कहा तंवरा सारा भ्रेळा हुया बात म्हारी मान ल्यो पडिहाराने बेटी मत दिजो जीओ । सुगणा बाई ने रामदेवजीकी संसार में हर पल परिवर्तन होने की सिख का ध्यान करते हुये अपना कर्तव्य निभाया फिर भी कभी कभार उसका जी भर आता तो कहती थी मां मेरा विवाह पुंगळगढ क्यों किया जहां मुझे दुख के सिवा कुछ नही मिला)

बोयता सेठ को परचा

(एक दिन रामदेवजी नगर भ्रमण कर लौट रहे थे मो पोकरण मार्ग पर पेड के निचे एक वैश्य दिखा। शिश झुकाये बैठा था। घोडे की टाप की आवाज सुन शीश उठाकर देखा तो उसकी ऑखो में आंसु देख रामदेवजी घोडे से निचे उतरकर पुछने लगे ये लम्बी सी लकडी के बीच कपडा बांध चारो टोकरे किनारे पर लगा कावडीया सा सामान लिये यहॉ क्यों बैठे हो और पुछने लगे किस चिज का व्यापार करते हो तुम्हारा नाम

क्या है?रामदेवजी का स्नेह भाव तथा प्यार देखकर ठठं रो पडा वैश्य और रामदेवजी ने अपने अंगोछे से ऑसु पोछे तो कहने लगा प्रभु मै रुणीचा की गली गली घुमकर मिरची बेचता हुं । रामदेवजी ने कहा परदेस जाकर पैसा कमाओ, सोना चांदी के गहने बनाकर बेचो, बोयता ने कहा प्रभु मै लोहागढ का रहने वाला जाती से जैन हुँ। ओसवाल जाति मेरी कामकाज हेतु यहां रहता हुं। तब रामदेवजीने कहा की रुणीचा के सेठ होकर मिरची बेचते हो और कहा जाओ बाबो भली करे बोयताने सारी तय्यारी कर बीबी बच्चों को समझाबुझा दरबार में गया, दर्शन लीये और कहा प्रभु सात समुंदर पार बस आपके हुकम को मान विश्वास लेकर जा रहा हुं, अगर कोई विपदा पडे तो हे प्रभु मै आपके ही भरोसे जा रहा हुं ।

प्रभु की कृपा से जब पहुंचे सात समुंदर पार तो सारे साधन जुटते चले गये हरपल यही भवना रही बोयता की के सब बाबा की कृपा से हो रहा है वही करवा रहे मुझसे सब कुछ मै तो बस निमीत्त मात्र हुं। सुख धन दौलत कमाया, सोना चांदी हिरे जवाहरात का बडा नामी बेपारी बन गया तो कहने लगा अब बाबा की मेहर हो गयी है कुछ ही महिनों मे साल दो साल हुअे पुरे चौबीस महिने सोचा बहुत धनसंचय हुआ अब थोडा परिवार से मिल आब। जाने की तय्यारी हुअी। सबके लिये कुछ न कुछ खरिदा और सोचा मेरे बाबा भी खुश होंगे इसलिये एक हीरे मोती जडीत नवलखा हार खरीदा । शाम की मध्यम गौधुली बेला में सारा सामान जहाज में लदवाकर प्रस्थान किया। नांव मे जब रात के दस बजे तो भोजन किया, मल्हार नाविक को कहा मै विश्राम करता हुं, दुसरे दिन सुबह भोर होते ही हम पहुंचेंगे। निंद ही नही आयी, खुशी के मारे बैठे बैठे सभी याद आने लगे। जब पत्नी के बारे में सोचा तो मनमें विचार आया इतना महंगा नवलखा हार बाबा को देकर क्या मिलेगा। बीबी पहनेगी सब खुश होंगे। इस तरह बाबा को देने की क्या आवश्यकता है। उनके पास तो बहोत पडे है। ऐसा सोचाही था । दुसरे दिन नाविक सुबह दौडा दौडा आया कहने लगा- सेठ मौसम बहोत खराब बनता जा रहा तो गडबड में सारा सामान बाजुमें रख दौडा दौडा सेठ बाहर गया। कुछ देर मे चारो तरफ लहरे उठने लगी, नांव में सभी नौकर चाकर घबराये, कुद गये, सेठजी अकेले। तेज आंधी चल रही। तुफानी बारीश हुअी, नैय्या हिलोरे लेती डुबने लगी मौत मानो सामने खडी सारे देवता याद आगये। और याद आयी रामदेवजी की बात ष हेलो पाडताही बेगो आब्जीओष मन ही मन सोचने लगा हे प्रभु क्या गलती हुअी कैसी परिक्षा ले रहे हो। मै अपना तन मन धन सब खो बैठुंगा। रामदेव मेरी रक्षा करो, हे लीले के सवार बचाओ बाबा और

कहने लगा प्रभु मुझसे गलती हुअी क्षमा करो। इधर बोयता सेठ पुकार रहा उधर रामदेवजी अपने भाई बीरमदेव संग चौसर खेल रहे थे । जैसे ही गोटीया घुमाई अनोखे अंदाज में और छोडी तो बिरमदेव ने रामदेवजी के कुर्ते की बांह पानी से झरती देखी और हाथें पर समंदर की झाग फेण देखकर अचंभीत होकर पुछने लगे पभु ऽ

तब मंद मंद मुस्कुराते रामदेवजी बोले बीराऽऽ सब कुछ सामने आ जायेगा ।

पांच दिन बीते नांव किनारे पहुंची सारा सामान घर पहुचाया सब देख लिया पर वह हार नवलखा नही मिला तो उदास हुआ । बोयता सेठ बाबा के दरबार में आया तो देखा बीरमदेव - रामदेवजी चौसर खेल रहे थे। चरणो में लोट पडा तो रामदेवजी बोले क्या बात है बोयता ने कहा मैने आपके लिये एक हार खरिदा था वो तुफान में कही खो गया है । फिर सारी बात सुनायी घटना बोयता ने तो बीरमदे मनमे पछताये जब बोयता कहरहा था बोयता की बात सुनकर रामदेवजी बोले मेरे लीये ली हुअी भेंट मुझतक नही पहुंचा सके तो नाराज न हो बोयत और अपनी जेब में हाथ डाल एक हार निकाला जब रामदेवजी ने तो दंग रह गया बोयतासेठ, क्योकी वह वही हार था जो उसने खरिदा था। मन ही मन सब समझ चरणों मे लोट पडा और एक ही बात बोला

परचाधारी हो कलयुग में रामधणी दातार
जब तक तन में प्राण है मेरे दुंगा नही बिसार

लाखा बिणजारा को परचा

एक दिन रामदेवजी आंगण मे बैठे चौकी पर कुछ सोच रहे, मुस्कुरा दिये और घोडे पर सवार होकर जंगल की ओर चल दिये । बालक का रुप धारण किये सामने आ रही बनजारे की बैलगाडी को रोककर पुछा कहा जा रहे हो । गाडी मे रखी इन बोरीयो मे क्या रखा है?बनजारे ने सोचा सच कहुंगा तो यह बच्चा जाकर नगर में किसी को कह देगा तो टॅक्स देना पडेगा । तो झुठ बोलकर मिश्री भरी बोरीयोंको नमक की बोरीया बताकर आगे चल दिया । तब रामदेवजीने कहा जैसी तुम्हारी भावना वैसाही फल पाओगे ।जब रामदेवजी ने सोचा की धन की लालच में यह सच को छुपा रहा है तो कहने लगे ठिक है और

बालक लीले पर सवार हो आगे निकल गया बिणजारे ने बैलोंको हांक कहा पिछा छुटा उस बच्चे से और आगे बढा। कहने लगा अगर सच कहता तो चुंगी देनी पडती, फोकट

का खर्च हो जाता, विचार करते बाजार पहुंचा बेपारीयोंको नमुना बताया जिसने भी चखकर देखा तो नमक था । मन मे सोचा ये कैसे हो गया । सारी हकीकत मेवाडी को बताई और बोला मेहर करो

पुरुशोत्तम मेवाडी बोल्यो भायां मेहर तो बाबा करे ।
म्हे तो बस ब्योपार करां हां बाबो बेडो पार करे

(लाखा ने चखा तो पसीने पसीने हो गया, सारा किस्सा सुनाया मेवाडी को सभीने सलाह दी वो बालक नही अवतारी पुरुश राजा रामदेव थे जा पकड पांव बापजी के और लाखा दौडते हुअे दरबार में गया और रामदेवजी के चरणों को पकड लाखा कहने लगा प्रभु मुझे क्षमा करो मै आजसे कभी झुठ नही बोलुंगा । रामदेवजी ने कहा जा सारा नमक मिश्री बन जायेगा और कहा जा गुणी सुं प्रसाद ल्या और म्हानं भी दयो भगता मं बाटो लाखा जाओ बेगासा। लाखा गया सभी बोरीयें से जम्बुरो घोंप सेपल लिया तो पहले खुद ने चखा और कहने लगा)

ँ अरे घणी घणी खम्मा म्हारा हिंदवा पीरने दिन दयालु दिनानाथ जीओ

ँ लुणरी मिशरी बणाया रामदेवजी सांचा परचाधारीजीओ खम्मा...

।।इति श्री रामदेव भक्त लाखा बिणजारा साक्षात्कार प्रसंग
श्री राजेन्द्र शर्मा द्वारा रचित कथा विरामस्य ।।

बोलो परचाधारी भगवान की जय

पांच पीरें को परचा

" देश विदेश में होने लगा श्री रामदेव गुणगाण
पीर औलीया मौलवी सुने खडे हो गये कान
खडे हो गये कान मनमे यही बिचारे
कही अल्लाताला तो मरुधर में नही आन पधारे
इस्लाम धर्म का महातीर्थ मक्का मदीना है कहलाता
कहते है वंहा पर मरने वाला सीधे जन्नत को जाता
मुहम्मद साहीब की दरगां के दर्शन काजो लाभ उठाते है
खुशनसीब वही कहलाते जो हज करने को जाते है
"सुनकर रामदेव की महिमा, वो तो, आखरी निर्णयपर आये
सब पीरोमें श्रेश्ठ पांच को चुनकर के हम भिजवाये
कहा इल्म अपना बतलाओ रुणीचा में तुम जाकर

अपने कदमों मे झुक जाये रामदेवजी खुद आकर
तसबी हाथो मे रखी लम्बी टोपी सरपे जीनके
काले पीले नीले अकीक की माला थी उनके तनपे

(एक दिन पांच पीर रामदेवजीकी परिक्षा लेने रुणीचा आये तो नगर के द्वार पर रामदेवजी खडे स्वारथीया हाथीके बेटे बिरजु से बतीया रहे थे । पांचो पीरो ने आकर उनसे पुछा रामदेवजी कौन है कहां रहते है?यह सुनकर बिरजु दौडते हुअे अपने घर गया औा अपनी मॉ से कहने लगा ऐं मांई ऽ जंगल में पाच मोटे मोटे आदमी आये है और रामदेवजी अकेले है । मॉ ने कहा स्वारथ्या वो बडे घर का बेटा तु गरीब की औलाद हमारा उनका मेल नहीं कुछ। मजदुरी कर उनका संग करने से क्या लाभ है। पर स्वरथीया को नहीं मानते देख उसकी मॉ ने उसे एक कमरे मे बंद कर दिया और ताला लगाकर अपने काम मे लग गई कमरे मे एक विशधारी सॉप बैठा था । स्वारथीया जोर जोर से अपनी मॉ को आवाज लगाकर कह रहा था। मुझे मेरे प्यारे के पास जाने दो अनाज की गुहीं से निकलकर नाग स्वारथीया के पास आया, गलतीसे स्वारथीया का पांव उस मणीधारी सांप की पुंछ पर पडते ही उसने डसा तो पानी भी नहीं मांगने दिया। स्वारथीया चित्त हो गया। मॉने सोचा चिल्लाकर थक गया, सो गया होगा, वह काम मे लगी रही। उधर रामदेवजी को पीरो ने पुछा भाई हमे रामदेव से मिलता है तो उन्होने कहा मै हीं हुं रामदेव कहीयें क्या काम है बैठकर बताईये । धुप तप रहीं थीं तो पीरें ने झोली से नीम की दातुन निकालकर गाडदी तो पिंपल मे वृक्ष तनकर खडे हे गये। रामदेवजीने कहा भईवाह । तो पीरें ने कहा आपका भी बहुत नाम है कुछ अपना भी इल्म बताईये तो रामदेवजीने कहा बीराजी ये तो नीम के नीचे आसन लग गये , पीरें ने कहा वजु करना है नमाज का समय हो गया पर यहां पानी नहीं है और बिना पानी के हमारी वजु नही हो सकती । तब भाले की नोंक धरती पर मारते हीं पानी का फव्वारा फुट पडा तब पीरें को लगा की हॉ ऽ ये हीं रामदेव हो सकता है और बाबा रामदेव बोलने लगे मै घोडे को घास चराता हुं आप नमाज अदा किजीये ।नमाज अदा कर पीरें ने कहा अब इजाजत दे हम चले अपने वतन को आपसे मिलना था मुलाकात हो गई, बस अब चलते है तो रामदेवजी ने कहा आप ऐसे नहीं जा सकते कुछ तो मेहमान नवाजी करने दो ।

पीरें ने मान लिया और सभी चल दिये महलकी ओर उधर स्वारथीया की माने खिडकी से झांक कर देखा की बहोत देर हो गई स्वारथ्या को कुछ खायेगा-पियेगा तो क्या

देखती है की उसका सारा शरीर नीला पड गया था। मुंह से झाग निकल रही थी , झट दौड कर किवाड खोला तो चकराकर गीर पडी जोर जोर से चिल्लाने लगी । बैद हकीम बुलवाये तो कहने लगे यह तो मृत पडा है। बिलख बिलख कर रोने लगी इतने में रामदेवजी पीरों के साथ उधर से निकल रहे थे । तो स्वारथीया के घर के सामने जमा लोंगो की भीड देखी और किसी के मुंह से निकला अरे बाबा आगये। दौड पडी बिमला खातण चरणों मे पडी अर्चना करने लगी। मेरे कुल में एकही बालक है । आपको कुछ करना ही होगा। रामदेवजीने पीरों से कहा हो सके तो इस दुखीया के आसु पोछलो तब पीरों ने झोली से कुछ निकालकर सारे शरीरपर छिडककर मंत्रोचारण किया और नाडी देखी तो हाथ जोडकर कह दिया नां ऽ बहोत देर हो चुकी सारे नर नारी रामदेवजी से दुहाई देने लगे तब पीरों ने कहा आपभी कुछ कर देखे, लोगो को आपपर बडा भरोसा है। मंद मुस्कुराते हुए रामदेवजी ने पीरों को देख स्वारथीया की ओर करुणा भरी दृश्टी डाली और आवाज लगाते हुओ कहा बिरजु उठो देखो बडे भाग्य से पीर हमारी नगरी में पधारे

है । इतना कहते ही स्वारथीया अपने हाथों से आँखे मलने लगा और देखते ही देखते उठ बैठया तो उपस्थित जनसमुदाय ने कहा)

“ बोल रामाराज कंवार की जय ल

“ मुर्दे को जिंदा देखा तो सोचन लगे थे पीर ल

मक्का वापस शीघ्र ही जाना बात बहोत गंभीर

(महल की ओर निकल पडे सभी तो देखा दरबार ए खास में नर नारीयों का जत्था दर्शन को खडा बाट निहार ते हुए कह रहा था ।)

“ जय हो रामा राज की रुणीचा के सरदार की

अजमल घर अवतार की जय कलीयुग के अवतार की ल

(महल में पहुंच कर जाजम बिछवाई, पीरोंको सादर सम्मान से बिठाया और कहा कुछ ही मिनटों में भोजन परोस दिया जावेगा आप जीमजुठ कर बिदा होंगे । तो पीरो ने कहा जी नही यह असंभव है क्यों की गुरु आदेशानुसार हम भोजन अपने कटोरे में ही पाते है और वो कटोरे हम मक्का भुल आये, बताओ अब क्या करें तो सभी ने देखा रामदेवजी ने सम्मान के साथ पिरोंको भोजन करवाया । और कहने लगे पांचो पीर)

र्‍ हो¸ पीरारों पीर बाबा रामदेव कहीने- हिंदु मुसलमाँ दोनु ध्यासी जीओ

और कहा रामदेवजीसे आप पीरो के पीर कहलाओगे ।

"चमत्कार हम कर सकते पर ऐसे अदभुत काम नहीं
अदभुत लीला आपकी जंहा हमारी पहुंच नहीं
हो गये चकीत लख पात्र पीरोंका नशा ही पुरा उतर गया
उन्मादी जीचन पीरें का क्षणभर मे ही सुधर गया

रामदेवजी का ब्यावला

अमरकोट सोढा घरे कन्या जनमी एक
अजमल घर अवतार सुं लिख्या विधाता लेख

अमरकोट जो आज पाकिस्तान के पुर्वोत्तर मे आज भी बसा है एक समय था जब वहां राजपूत राजा दलपतजी सोंढा का राज था। बडे शुरवीर पराकमी बलवान दयालु राजा हर दिन प्रजा की देखरेख करने के लिये हाथी पर सवार होकर नगर भ्रमण करते थे। एक दिन राजा की सवारी महल से निकली तो यातायात व्यवस्था हेतु आगे आगे चल रहे सैनीको ने देखा एक आदमी बिच रास्ते संकरी गल्ली में कुछ सामान बिखेरकर बैठा था तो उन सैनीको ने कहा अरे हटो राजा दलपतजी सोंढा की सवारी आ रही है । किन्तु वह आदमी बिच रास्ते बैठा कहने लगा, तुम्हारे राजा से भी मै बडा हुँ। ज्यादा भाग्यशाली हुँ। जो काम मै कर सकता हुँ वो तुम्हारा राजा नही कर सकता। सुनकर उस आदमी की बाते सैनीक उलझ गये उसके साथ इतने में राजा की सवारी पहुँची तो राजा ने कहा किसबात का जमावडा हो रहा । तब सैनीको ने आपबीती बताई, सुनके राजा हाथीसे उतरकर उसके पास गये और पुछा के मुझसे ज्यादा भाग्यशाली आप कैसे है?कौनसा काम जो मै नही कर सकता हुं? क्या आप जानते हो मै राजा दलपत सोढा मेरे नामका सिक्का जो चलता है इस राज्य में तब उस आदमी ने कहा राजन आपके दो पुत्र है, कुंवर इंद्रजीतसिंह, दुजे कुंवर जीवनसिंह। किन्तु आपके कोई कन्या नही है सो यह मनुश्य योनी पाकर भी आप सब कुछ कर सकते हो पर कन्यादान नही कर सकते जो इसी योनी में संभव है। वो काम मै कर सकता हुँ क्योंकी मेरी एक कन्या भी है। अब बताओ की मै तुमसे ज्यादा भाग्यशाली हुं या नही तुम राजन अन्नदान, वस्त्रदान, भुमिदान यहांतक की

रक्तदान भी कर सकते हो। पर कन्यादान नही कर सकते। राजा के दिल में तीर की तरह घुस गई ये कमी और पुनः लौटकर महल में जाने की बजाय राजा दलपत सोंढा अपनी कुलदेवी हिंगलाभवानी के दरबार में गया , आरती प्रसाद का थाल हाथमे लेकर भवानी से कहने लगा हे कुलदेवी अगर आप की कृपा हो तो मै इस मनुश्य योनी में कन्यादान का पुण्य पावन फल प्राप्त कर सकता हुं ।माँ के चरणो मे श्रध्दापुर्वक अरजी रख राजन घर गये और ठिक नव वे महिने शके 1330 संवत १४६४ की कार्तिक शुक्ल नवमी को एक सुंदर सी कन्यारत्न ने राणी की कोख से जनम लिया। सारे नगर में खुशी मनाई गई, ढोल नगारे बजवाये गये। घरघर दीप जगे, अनधन सोना बटवाया राजाने तो दासी कहने लगी राजन इतनी खुशीयॉ मना रहे हो पर क्या आप जानते हो की जीस कन्या ने जनम लिया वह जन्मतः अपाहिज है, अपंग है। “ना चाले ना हाले ना बोले ना डोले “ राजा ने कहा इसकी चिंता वही करे जीसने उसको भेजा है। मेरा यहा कुछ भी नही है। धीरे धीरे समय बीतता गया आखीर कन्या जब विवाह योग्य हुई तो स्वाभाविकतः राजा को चिंता हुई, कौन करेगा इस अपाहिज से विवाह। चिंता को चिंतन में बदला राजा दलपतजीने तो एक दिन विचार आया मनमें और अपने राजपुरोहित पं. गिरधारीलाल जोशी को बुलावा भेजा। पंडीतजीसे कहा गुरुवर मेरी एक इच्छागर तुम पुर्ण करवाओ की अपने पडोसी राज्य रुणीचा के कुंवर रामदेव से मेरी बेटी नेमल का विवाह जोडो तो मै आपको पांच गांव की जागीर भेंट करुं। क्योंकी रुणीचा के रामदेव तपधारी कहलाते है। राज पुरोहित ने घर जाकर जोशीजी ने धर्मपत्नी से सलाह मशवरा किया और दुसरे दिन राजा से रत्नजडीत नारियल, फलफुल मेवा मीशरी से लदा रथ लेकर रवाना हुए। रुणीचा पहुँचे तो देखा अजमालजी द्वारपर स्वागत हेतु खडे थे तो जोशीजी ने कहा मै अमरकोट से आया हुं आपके बेटे रामदेव के साथ अमरकोट के राजा दलपतजी सोढा की बेटी नेतलदे का संबंध जोड परिणय सुत्र में बांधना चाहता हुं । अजमालजी ने रिश्ता स्विकार कर लिया । धुमधाम से तिलक समारोह हुआ । दोनो घरोंमे विवाह की तय्यारीयां शुरु हुई, दलपतजी ने बारातीयों की आवभगत में कोई त्रुटी ना रहे इस बात का विशेश ध्यान रखते हुए तय्यारीयां आरंभ कर दी । मैणादे ने सखी सहेली, रिश्तेदारों के साथ गीत गाते हुये कुम्हार के घर जाकर चाक पूजन कर बिंदायक की स्थापना की । सभी दुर दुर से रिश्तेदार परिवार वाले आये । विवाह मे हर

कोई आया पर सुगणा नही आयी यही कमी थी हर कोई मस्ती मे आनंद मे झुम रहा था । सभी को देख मंद मुस्कुराहट के साथ उनकी खुशी को देख अनंदीत होते किंतु जैसे ही माता मैणादे की ओर नजर पडी तो अपनी मॉ की ऑखो में झलकते ऑसुओ की बुंदे देख बिचलीत हो गये और मॉ के पास जाकर पुछने लगे "ए मांई कंई बात हं हर कोई मेरी तरफ देख आनंदीत हो रहा है, मेरे विवाह की खुशीया मना रहा है और एक तुम हो की रो रही हो, क्या बात है कुछ तो बता । पिछे लग गये अपनी मॉ के और अंत मे कहने लगे की अगर नही बतायेगी तो मै भी विवाह नही करुंगा, तब मैणादे माता ने कहा बारा साल से मैने सुगणाकी सुरत नही देखी । लांछा का विवाह हमने ओसीया में कर दिया और आग लगे उस पुंगलगढ में जहां मेरी सुगणा दुख पा रही जैसे ही मॉ ने यह बात कही रामदेवजीने मुंह पर हाथ रख दिया कहा माता इस तरह अगर कोई बेटी की मॉ दुःसीश दे वह खाली नही जाता ऐसा मत कहो ठहरो मै अभी जाकर सुगणा को लाजा हुँ रोओ मत तब मॉ ने कहा तेरे अंग तेल हलदी लगी है तुम मंडप के बाहर नही जा सकते। किसीको भेजकर बुलवाओ तब रामारजकुंवार ने अपने दास रतनाराईका को बुलावा भेजा। रतनाराईका आया व कहा हुकुम करो बापजी तो बताये की सुगणाबाई को लेकर आना है तो उसने कहा की मेरे छह भाई अब तक लेने गये जो वापस नही आये मै अपने वंश का अंतिम चिराग हुं तो रामदेवजी कहने लगे मन मे विश्वास रखकर जाओ किसी भी विपदा मे मुझे पुकारोगे तो मै आजाबंगा । रतना ने कहा किंतु बापजी ये पुंगलगढ है कहां मै तो कभी गया नही जानता भी नही तो कहने लगे उंट गाडी तैयार खडी है बैठ जाओ पुंगलगढ पहुंच जाओगे । रतना सवार हो गया कुछ ही मिनटों में निंदलगी। सुबह भोर होते ही पंछीयो की चहचहाट से ऑख खुली तो देखा सामने कुए पर पनिहारियॉ पानी भर रही थी, उनके पास जाकर पुछने लगा की बहनजी ये पुंगलगढ कितनी दुर है तो उन्होने कहा ये सामने रहा पुंगलगढ । और पुछा तुम कौन हो क्यों आये हो?तो रतना ने सारी बात बताई पनीहारीयों ने कहा कि तुम्हारी सब बात ठीक है किंतु पडीहार बडे जुलमी है तुम्हे वापस नही जाने देंगे। जिन सिढीयोंसे चढकर तुम पहुंचोंगे वह तुम्हारे जीवन की आखरी चढाई होगी। उनकी बाते सुनकर घबराया नही बल्की कहने लगा री बहना रामदेवजी की महिमा बडी निराली है । जै बाबा की
तब उसके विश्वास पर मिट गयी पनिहारियां कहती है

रतना एक बात सुणले। रामदेव बिरमदेव तेरे काम नही आयेंगे । किंतु रतना का मन पनिहारियोंकी बातो से नही डगमगाया श्रध्दा विश्वास कुटकुटकर भरा रतनाराई का के मनमें ले ध्वजा हाथ ब्ंट को चराने छोड चढ दिया किले की चढाई । हाथ में ध्वजा मुख में प्रभु रामदेव का स्मरण कर मुंछो पर ताव देते कहने लगा जै बाबा की ।ब्ंची आवाज चीर मग्न शांती के बीच तीर की तरह गुंजती हुअी पडिहारो के कानो तक पहुंची। तो सैनिको को आदेश दिया देखो जाकर कुणं हं जो कामडीया की जैकार कर रहयो हं । सैनिकोने रोका किंतु रतना को चुप नही करा सके वो तो कहता चला गया जै हो रामापीरकी... महल में पहुंचतेही रतना ने देखा विजय सिंग सिंहासन पर बैठे भाईयोंसे बाते कर रहे थे । रतना ने विवाह पत्रिका हाथ में दी और कहा जै बाबा की । तो विजयसिंग बोले दरबार में हमारे खडे हो और जय उस रामदेव की बोल रहे हो जो निच घरों मे जाकर तंदुरा बजाकर क्षत्रियोंके नामपर कलंक लगा रहा है । तो रतना ने कहा खबरदार अगर रामदेवजी के बारे में कोई उंची निची बात की तब पडिहारों ने रस्सी से हाथ पांव बांधकर रतना को कुअे में लटका दिया ।और जब दासी ने जाकर रतना के बारे में सुगणा को बताया तो चिल्ला पडी सुगणा -नहीऽऽ आकोश करते हुअे सासुजी एवं देवर जेठ से बिनती करने लगी, कहने लगी मुझे पिहर जाने दो । रतना पर जुल्म ना करो । किंतु पडिहारों पर बिनती का कोई असर नही हुआ आखिरकार मुंह से निकलपडा अब तो रामदेव ही आकर बचायेंगे । और रामदेवजी को पुकारने लगी । उधर कुंए में उलटा लटका ऑखो मे खून उतर गया ऑखे लाल बुंद हो गयी पीडा होने लगी तरे रामसा की याद आयी एक ही बात विपदा पडने पर पुकारना। तो रतना ने सच्चे मनसे पुकारते हुए अरदासकी रतना की पुकार सून जैसे ही रामदेवजीने पांव धरा जैसे ही तो मालण जो काम कर रही थी उसने क्या देखा की एक महापुरुश के बगीचे में पांव धरते ही सारा वातावरण बदल गया। धरती पर वह एक बगीचा था जो बरसो से सुखा पडा था । जो मालण देख रेख कारती थी उसने देखा जैसे ही रामदेवजीने पांव रखा सारी बगीचीमे कोमल दुबसी घांस हो गयी। फुलोंकी डालीयोंपर रंग बिरंगे फुल लग गये जिसे देख बगिचेमें काम कर रही मालण अचंभीत होकर दिव्य आत्मा के दर्शन कर भावुक हुई और देखा डाली डाली में तंदुरेकी तार बज रही थी और पत्ती पत्ती एक ही वाणी बोल रही थी ओम नमः शिवाय ओम नमः शिवाय और पुंछने लगी की हे महापुरुश आपके आते ही पेड पौधो की

हर डाली से तंदुरे के तार की सी मधुर ध्वनी सुनाई दे रही है सारा सुखा बगीचा फुलों पत्तीयोंसे महक उठा क्या बात है?आप कौन है क्या नाम है?कहां से आये हो तो रामदेवजी मंदमंद मुंस्कुरा दिये। मालण ने थोडे पुरुप तोडकर कुछ बाबा रामदेवजीके चरणोंमे अर्पण कर प्रणाम किया तथा कुछ पुरुप लेकर पुंगलगढ पर गई तो हाथोंमे रंग बिरंगी फुलोंकी टोकरी देखकर पडिहारें ने पुछा तो मालण कहने लगी बगीचे में एक महापुरुश आया है जिसके पांव रखते ही सारे बगीचे में रंगबिरंगी फुल लग गये। तब पडिहारें ने पुछा कौन आया है कैसा दिखता है क्या नाम है उसका तो मालण कहती है और कोई नही वो मरुधर का बेताज बादशहा रामदेव है।

और रामदेवका नाम सुनते ही पडिहार कोधीत होगये और विजयसिंग ने कमर से कटयार निकाल नाक कांट दी मालणकी तो रक्त की चित्कार उठी और मालण कहती है मेरी क्या नाक काटते हो, नाक तुम्हारी कट्रेगी । और चले गयी रामदेवजी की शरण में । रामदेवजी के आने की खबर मिलते ही विजयसिंहने आदेश दिया जितनी भी बारुद है बगीचे पर बरसाओ । सैनिकोने महल से तोफे चलाई। इधर श्री रामदेवजी ने पंचानन शंख फुंका। साक्षात कालभैरव, हनुमान, चौशस्ट योगिनीया पधारी । भयंकर युध्द हुआ और प्रभु की माया से सारी बारुद वापस किले पर जाकर बरसी। महल धु धु कर जलने लगा और भगदड मच गई । सुगणा की सासुजी ने अपने बेटें को समझाया सुगणा महलपर चढकर भाई को मनाने लगी । पडिहारोके शरण आने पर रामदेवजीने अपनी माया समेटी । सबकुछ शांत हुआ रामदेवजी पडिहारो के साथ रतना के पास आये और रामदेवजीकी दृस्टी पडते ही पडिहारो ने देखा जंजीर टुटकर जमीन पर गीर गई । जिसे देख सारे पडिहार चरणों मे पड गये और चोल्या बिदडी के साथ सुगणा बिदा हुअी तो सासु ने कहा अमरसिंह

पोते को मत ले जाओ लेकिनसुगणा के तथा अमरसिंह के जीद करने पर

साथ ही बिदाई हुई रास्ते में चोरो ने डोली को लुटा सुगणा की पुकार सुन

फिर रामदेव पधारे चोरो को अंधत्व प्राप्त हुआ । रुणीचा पहुंचकर सुगणा ने

देखा रामदेवजी आसन पर बिराजे है और मामी, भुवा, मावसी, बहन लांछा

लड चांव कर कोई माथे का पट्टा भर रही कोई तिलक लगा रही, कोई घी

बतासे खिला रहे, कोई हाथ में कोई पांव मे मेहंदी लगा

रही और कोई
पुरुषहार पहनाकर गीत गाकर झाले वारणे ले रही थी। इधर रामदेवजी के
लाडचाव हो रहे थे उधरा अमरकोट में नेतलदे को सजासंवार कर सहेलियां
गीत गा रही थी । अमरकोट मे राजा दलपती सोढा के यहा शादी की
धुम हो रही मंगल गीत गा रहे नेतलदे को चौकीपर बिठा सहेलीयोंने
मंगलगीत गाये।

"अरे लिलुडापर बैठ गया जद रामाराज कुमार
देव पुरुष बरसाया जय हो रामधणी सरकार ल
लिलु घोडो नवलखो जारे मोत्या जडी लगाम बिंद
बण्या जब रामदेव रुणीचा का श्याम

(बारात अमरकोट पहुंची तो राजा दलपत सोढाने सन्मान के साथ सबका
स्वागत कीया जनवासे पर सभी बारती आनंदीत हुये कुंवारा मांडा थापने
जवाई पहले पंहुचे खुब आवभगत के साथ मिजवानी हुई, सामेळा हुवा जवाईने
सारे नेग कीये बारातीयोंने आतिशबाजी कि, ढोल नगाडे, शहनाई के साथ
बारात अमरकोट के मुख्य मार्गसे महल की ओर जा रही थी, नरनारी अपने
घरके झरोखो से रामदेवजी के दर्शन ले रहे, पुरुष बरसा रहे थे । रामदेवजी
जद तोरण द्वार पहुंच्या तो लुगायां गीत गा रही थी)
तोरण द्वार पे आये रामदेव की आरती उतारने आयी सासु ने तिलक लगाया
और मन ही मन कहा आप साक्षात विरुणु के अवतारी हो इसका प्रमाण हमको
भी तो दो तब मंद मुस्कुराते हुये अंतरयामी रामदेव मनकी बात जानकर नार्दन
के हाथ से निम की डाली लेकर जैसे ही तोरण पर रखी तो उपस्थित सभी नर
नारीयोंने क्या देखा रामदेवजी ने जैसे ही तोरण मारा तो तोरण द्वार पर लगी
लकडे की चिडीयां चहचहाते हुये आसमान में उड गयी। जिसे देखकर सभी ने
रामदेवजी की जय जयकार की। ब्राम्हणोने वेद मंत्र का उच्चारण किया। और
जैसे ही विप्रदेवने रामदेव जी का हथ लेवा किया तो

रामदेवजीके स्पर्श मात्र
से जन्मता अपंग नेतल के सारे शरीर में चालना हुई और खडे होकर फेरे लेने
लगी तो सभी ने यह परचा देख कहा बोलो रामाराजकुमार की जय)

ब्राम्हण वेदमंत्र पढ बोलने लगे मंगलाश्टक

"स्वस्तीकं गणनायक गजमुखं मोरेश्वरं सिध्दीदं

बल्लाळं मुरुडं विनायकमंहं चिंतामणीस्थेवरं

लोण्याद्री गीरीजात्मकं सुरवरं विश्वेश्वरं ओझरं

ग्रामे राझणं संस्थीतो गणपती कुर्यात सदां मंगलम्

वधू व-यो शुभंम् भवतू सावधानल

गंगा सिंधु सरस्वतीच् यमुना गोदावरी नर्मदा

कावेरी शरयु महेंद्र तनया शर्मण्वती वेदीका

क्षिप्रा वेत्रवती महासुर नदी ख्याता तथा गंडकी

पुर्णा पुर्णजला समुद्र सरीता कुर्यात सदा मंगलम्

वधू व-यो शुभम् भवतू सावधान

तदैव लगनम् सुदीनं तदैव ताराबलं चंद्रबल तदैव

विद्याबलं बुध्दी बलं तदैव लक्ष्मी पते धीयुशं स्मरामी

(अग्नी के साक्षी में सात फेरे लिये गये। सभी नेगचार संम्पन्न हुये तथा सभी
बारातीयोने सजन गोठ की रसोई का आनंद लिया छत्तीस प्रकार के बत्तीस
भोजन बने राव रणसीजी, धनरुपज अजमालजीने कोठयार में जाकर देवी
देवताओं की पितरोंकी पत्तल निकाली । बारातीयों ने रसोई का आनंद लिया)

f खम्मा ३ रे कंवर अजमालरा अनदातारो पार नही पावा जीओ

(सासूने सोचा जवाई के बारेमे बडी महिमा सुन रखी है तो कंवर कलेवा करने
हेतू रामदेवजीको बुलवाया गया सासुने आटे की बिल्ली बनाकर थाल में रख
मखमल का कपडा उपर ढक कहा आओ कंवरसा कलेवो

करलो तो रामदेवने
हात फिराया थालीपर तो बिल्ली जिवीत होकर नाचने लगी और महलमे गढपर
चौबारोपर हर जगह मॉ॑ मॉ॑ की आवाज आने लगी विदा होकर बारात
रुणीचा पहुंची तो महल में सन्नाटा छाया था बिरमदेव ने अंदर जाकर हालचाल
जाना तो दंग रह गये किसी तरह से आरती का थाल लेकर लांछा आयी तो
रामदेवजीने कहा आरती का थाल लेकर सुगणा क्यों नही आयी ? जबरन
सुगणा को बुलाया गया, उसकी आंखो में आसुं देखकर रामदेवजी ने कारण पुछा तो कहने लगी मेरे बेटे को सांप ने काट लिया है । उसका प्रेत महल में पडा है तो रामदेवजी ने सुगणा के आंसु पोछकर भांजे को आवाज लगायी तो रामदेवजी की आवाज सुनकर अमरसिंग दौडता हुआ आया जिसें देखकर सभी हर्षीत हुये और लांछा सुगणा ने आरती उतारी।)

।। इति श्री रामदेव रामायण मध्ये श्री राजेन्द्र ार्मा द्वारा रचित रामदेव विवाह कथा विरामस्य बोलो नेतल के भरतार की जय ।।

नेतलदे द्वारा तंवरो के वंश की वृध्दी

(नेतलदे को पुत्र प्राप्ती का सौभाग्य एक समय लीला रसीक रसराज वैभव श्री
रामदेवजी नेतल संग रंगपंचमी के पावन पर्व पर रथारुढ होकर रंगमहल के
उपवन वाटीका में बने ललीत लताओं से घीरे मोरमुकुट भवन में पधारे ।
जलक्रिडा कर मुक्त विहार करने लगें । कुछ दिनों पश्चात अजमालजी और
मैणादे की खुशी का ठिकाना नही रहा दोनो दादा दादी बनने की खुशीसे फुले
जा रहे थे, क्योंकी नेतलदे ने दो सुकुमारोंको जन्म दिया था । बडा था
सादाराम दुसरे देवराज । पुराणोक्त आधार यह कहता है की पश्चात पांव बेटे
व एक बेटी भी हुई जिनके नाम क्रमशः इस तरह है - गजराजजी, महाराजजी,
भीमौजी, बांकीजी, जैतोजी और बेटी भ्का नामथा चांदकुंवर । आज की घडी में
देवराजजी तंवर का वंश चल रहा है ।)

(जाम्माजी को साक्षात्कार)

(एक बार किसना भाट रुणीचा जा रहा था सोचा रास्ते में जाम्भेसर रुक
जाबंगा, संतदर्शन कर प्रसाद ले दुसरे दिन रवाना हो जाबंगा । यह सोच
पहुंचकर देखा अन्नकुट की प्रसादी हो रही थी । सतसंग भी हो रहा था तो
सोचा पहले दर्शन करलूं फिर भोजन पाबंगा, जाकर मुनी को प्रणाम किया
मुनी कर रहे सतसंग तो कह रहे थे " नाम जपले रे शिवनाम जपले ल।
जाम्भाजी ने कहा तुम कौन हो कहां जा रहे हो ?तो किसना भाट ने कहा एक
सिध्द पुरुश जिनका नाम है रामदेवजी मै उनके दर्शन लेने जा रहा हुं। बडे ही
महान तपस्वी संत है वे मै तो उन्हीं के भरोसे जिवन जी रहा हुं।जाम्भजी ने
रामदेवजी की बढाई सुनी तो ईर्श्या का भाव जागृत होकर बढता गया और
किसना से कहने लगे भक्तराज सुनो एक कामकी बात बताता हुं और कहा
कहना उस रामदेव से जाम्भाजी ने एक सुंदर सरुवर का निर्माण करवाया है
जलपान खातीर बुलवाया है । किसना ने कहा जी बापजी और भोजन कर
विश्राम किया दुसरे दिन भोर होते ही निकल पडा प्रभु का नाम स्मरण करते
हुए दुसरे दिन प्रातःकाल रामदेवजी को सारी बात बताई तो बाबा ने कहां मै
अवश्य जाबंगा। और मनमें सोचा जरासे अहंकार के कारण सारा तप जप
व्यर्थ चला जायेगा । और कल्याण की भावना मन मे लिये जाम्भासर पहुंचे ।
रामदेवजी के पहुंचते ही जाम्भाजी ने स्वागत सत्कार किया । कई प्रकार के
योग-ध्यान की ज्ञानीयों मे चर्चा हुई पश्चात जाम्भाजी ने कहा चले सरुवर
देख आये तो दोनो संत निकल पडे सरुवर के पास पहुंच शिश्योंके हाथों
जाम्भाजी ने कलश भरके जल मंगवाया और रामदेवजी से पीने को कहा
तो रामदेवजी बोले सरुवर तो सुंदर है । पर पानी खारा

क्यों? सुनकर हंस
पडे जाम्भाजी और कहा सारा गांव यही पानी पिता है और एक सेवक के हाथों
झारी भरकर जल मंगवाया । रामदेवजी ने कहा थोडा पिकर तो देखो और
जब जांम्भाजी ने चखा तो दंग रह गये। मुंह मे रखते ही तत्काल थुक दिया
क्योंकी पानी बेहद खारा था । रामदेवजी ने कहा आओ कभी रुणीचे इतना
कहकर चल दिये। दुसरे महिने जाम्भाजी को निमंत्रण भेजकर बुलवाया और कहा चलो रामसरोवर के दर्शन कर आयेंगे। जाम्भाजी के मन का मैल दुर नही हुआ यह जान गये थे अंतरयामी । तभी जाम्भाजी ने कहा पानी तो अमृत जैसा है किन्तु रेत बहोत है । माघ भादवे महिने में जल नही दिखेगा। तो रामदेवजी मुस्कुराये थोडी दुर लेजाकर अपना भाला धरती पर मारा तो पानी का फव्वारा फुट पडा। एक झारी भरके रामदेवजीने जाम्भाजीकों दी और कहा इसे लेजाकर जाम्भासर में मिला देना, तब जाम्भाजीको विश्वास नही हुआ। किन्तु जब आश्रम पंहुचकर जल मिलाया तो देखा सचमुच पानी पुरे सरुवर का मिठा हो चुका था। तो मन ही मन प्रणाम कर अपने आप को धन्य पाया। बिश्नोई जाती के सभी नर नारीयों का जत्था लेकर जै जै कार करते सभी वहां पहुंचे जहां भाले की नोंक से पानी निकाला था तो वंहा पानी के बहने से बाबडी का सा रुप ले लिया था । सभी ने जल पीया आंखो को लगाया तथा उसे परचा बावडी का नाम और रुप दिया जिसे बादमें दल्लासेठ ने पत्थरों से सजवाकर निर्माण कार्य करवाया है आज भी विदयमान है और कहने लगे जय बाबा की ।)

"रामदेवजी द्वारा भाभी सुमीत्रा एवं डालीबाई की समाधी का परचाल

(अजमालजीके साकेतवास के परचात पोकरण गढ में बीरमदेवज का राज था
जहां भव्य गोरक्षण गौसेवा का कार्य ऋशीवर बालीनाथजी की आज्ञा से हुआ
रानी सुमीत्रा नित्य सुबह उठते ही रोटी में गुडकी डली रख गाय बछडे को
खिलाने के बाद ही नित्यकर्म दिनचर्या प्रारंभ करती थी । एक दिन गाय
बिमार हुअी, दिनबदीन उसकी सेहत गीरती गई दुध देना बंद कर दी तो

बछडा भी भुखा रहने लगा और बछडा गतप्राण हो गया । यह देखकर सुमीत्रा
बेहोश हो गई रोने लगी बिलखने लगी । सभी ने समझाया पर कोई उपयोग
नही । एक सेवक ने यह खबर रामदेवजी को कही की आपको आपकी भाभी
ने बुलाया है । रामदेवजी निकल पडे पोकरण की ओर तथा अपनी भाभी के
पास पहुंचे धोंक लगाई तो भाभी ने कहा सारे गांव को चमत्कार दिखलाते हो मुझपर भी कृपा करो बछडे को जिवन दान दो अन्यथा इस गौ माता का और मेरा श्राप आपको लगेगा। रामदेवजी ने मन ही मन कुछ विचार किया कसाई के घर गये बछडा आंगण मे पडा था। उसकी पूंछ पकडकर खिंची, बछडा दौडते हुये अपनी मां के पास गया। रामदेवजी सीधे रुणीचा गये और सभी तंवरो को इकठ्ठा कर मात पिता को धैर्य बंधाकर आप खुदने चिरंजीव समाधी लेने का निर्णय जाहीर किया तो सभी हकके बक्के से हो गये । जब यह बात नेतलदे को पता चली तो रुदन मचाने लगी । प्रभु ने कहा वियोग तो भौतिक वस्तुओं का होता है । विधीलिखीत हर घटना घटीत होती है इसका न शोक मनाना ना खुशी । समता मे रहकर जीवन जीना चाहिये और खबर चारें ओर फैल गयी हर कोई रुणीचा की ओरजाने लगा । इस बीच डालीबाई की कथा समझलो । मेघवंशीयों में रामदेवजीका एक महान भक्त हुआ, जो अपना नाम अजरामर कर गया। जीसका नाम था सायर । हर दिन हर क्षण रामदेवजी को श्रध्दा से भजने वाला सायर एक दिन रामदेवजी संग शायर भीबालीनाथजी के आश्रम जा रहा था कहने लगा आपके साथ मै भी ऋशीवर का दर्शन कर लुंगा और दोनो जा रहे थे की रास्ते में झाडीयों के बिच किसी बालक के रोने की आवाज आयी डुबते सुरज की लालीमा चंहु ओर बिखर रही थी।पंछी अपने घरोंदे मे लौट रहे थे । पंछीयो की चहचहाट के बिच दोनो ने देखा एक पिंपल के पेड की डाली पर पोटली सी लटक रही, जिसमें से कन्या का मुंह दिख रहा था । झट सायर ने पेड पर चढकर गांठ ढिली कर निचे लटकाई रामदेवजी के हाथो में आते ही रोना बंद हुआ मंद मुस्कुराती रही बच्ची को सायर के हाथ देकर रामदेवजी बोले डाली पर लटकी मिली तो इसका नाम रखो डालीबाई । तुम्हे कोई संतान भी नही है इसीका पालन पोशण करो सायर के हाथ मे आते ही फिर रोना शुरु तो सायर

बोला कुछ तो करो। तब रामदेवजीने सीरपर हाथ फेरा तो डालीबाई चुप हो गई । बाबा बोले तुम्हे कोई संतान नहीं इसे पालो पोसो तो नाम रोशन होगा। चंद्रमा के समान कन्या बडी हो रही सायर के घर खुशीयॉ छा गयी जब भी सायर दरबार में जाते डालीबाई को भी ले जाते थे । दिन रात रामदेवजी का ही नाम स्मरण करती डालीबाई समय समय पर रामदेवजी को पुकारती । पुकार सुनकर रामदेवजी आते तो सतमार्ग पर चलने की राह बतातें साधना करवाते सीख देते और जीवन जिने की कला सीखाते थे। एक दिन नित्य की तरह अपनी गौओ को बछडो कों लेकर बनमें गई तो उसे रुणीचा की दिशा से ढोल नगाडे की आवाज आयी तो उसी ओर से आ रहे एक आदमी को पुछने लगी डालीबाई की नगर में बाजे किस कारण बज रहे है?तब वो आदमी बोला रामदेवजी समाधी ले रहे है। जैसे ही समाधी ले रहे रामदेव ये शब्द सुने दौडी डालीबाई रुणीचा की ओर दौड पडी । पहुंचकर रामदेवजी के चरण पकडकर कह ाप्रभु यह समाधी मेरे लिये खुदवा रहे हो बोले बाबा डाली को यह तो मेरे लिये है तब डाली ने कहा की अगर इस खुदाई में सात कदम पदर आटी, डोरा, कांगसी, कंगन, निकले तो यह मेरी शाल, दुशाला, खडाबं, तिलक, तंदुरा निकले तो समाधी तुम्हारी यह कहकर बैठ गयी । रामधणी को निहार रहे और खुदाई करने वालो ने आवाज लगाई देखा तो डालीबाई हर्श उठी

और पुरे विधी विधान के साथ बाबा ने समाधी पहले डालीबाई को दिलवाई

नवमी का दिन नव कलश मंगवाकर शुध्द जलके घडे भरे, नेजा रोपण

किया दुसरे दिन दशमी थी सारे नगरवासी इकठ्ठा हुए रात को जम्मा जगाया

रामदेवजीने । सभी को दिक्षा दी निजीया धर्म का मर्म समझाया अग्नी की

साक्षी में बाबा ने सभी भक्तों को अपने भावों से अवगत कराया सतराह बतायी

तो परमस्नेही भक्तो ने रामदेवजीको अपना गुरु बनाया । दिक्षा ली तो कई

प्रकार से ज्ञान संवर्धन कर निजीया धर्म का मर्म समझाते हुए साधना प्रारंभ

करवाई और ब्रम्हमुहुर्त मे ध्यान लगा सुरज की पौ फटते ही विक्रम संवत १५१५

भादवा सुदी ग्यारस शुक्लपक्ष गुरुवार के दिन सभी के

साथ समाधिस्थल की
परिकमा कर बाबाने कहा की साक्षात ब्रम्हा भी आजाये तो भी मेरी समाधी मत
खोदना नहीं तो पिढी दर पीढी भिक्षुक की तरह रहोगे और नही खोदोगे तो हर
पीढी मे पीर होगा तथा उँ नमः शिवाय के महामंत्रोच्चारण के बीच
रामदेवजी समाधिस्त हुए । दुसरे दिन रामदेवजी से मिलने उनके मौसेरे भाई
हडबुजी सांखला राजपुत प्रेमीभक्त आ रहे थे उन्हे रुणीचा के रास्ते में
रामदेवजी मिले तो उन्होने सारी बात बताई तो रामदेवजी ने स्मित हास्य कर
रतन कटोरा दिया और कहा मैणादे को देना हम आते है । हडबुजी रुणीचा
पहुंचे तो कहा मुझे तो अभी रामदेवजीमिले रास्ते मे उनके पास रतन कटोरा
देख सभी को आश्चर्य हुआ उत्सुकतावश बाबा के वचनो को भुल समाधी खोदी
तो सारे दुखी हुए वहां बस फुल और खडाऊ मिले ! बाबा नही मिले।)

हरजी भाटी को परचा

(इस परचे की विशेशताये है की आज भी बाबा रामदेव के परमभक्त राजपुत
हरजीभाटी की कथा स्वयं रामदेवजी भी बडे चावसे सुनते है । जब भी हरजी
भाटी का नाम लो तो रामा राजकंवार का स्मरण होता है ऐसे भक्त हरजी का
जन्म उगमसिंह भाटी के घर औसीया के पास पिंडजी री ढाणी में हुआ ।
अजमालजी के महल में घोडे,ब्टो की देखभाली करनेवाले उगमसिंहजी
रामदेवजी के परमभक्त थे । रामदेवजीके समाधिस्त होते ही उन्होने रुणीचा
छोड दिया, पिता के नक्शोकदम पर चलते थे । हरजी भाटी सारा समय
रामदेवजी का ही गुणगाण करते रहते । उगमसिंहजी चल बसे तो हरजी अपने
मामा के घर चले गये । बकरीया चराते दिनभर जंगल में

रामाधणी का नाम
जप करते घर आकर वही काम एक दिन अकेले बैठे घरमें
पूजा घर के अंदर
बाबा की प्रतीमा के सामने कहने लगे "बाबा एकल तो
दरबार में बुलाय लिजे रे
, बाबा थांसु आस लगी है मत ना तोड दिजे रे बाबा एकल
तोल अपने उम्र की
नवम वर्ष में पदार्पण करे हरजी ने अपने मामी से कहा
इतनी विपरीत
परिस्थितीयों में भी मै आपके साथ खुशी से रहता हुं
लेकिन मेरी एक इच्छा पूरी
करदो और हरजी कहने लगे मुझे एक बार रुणीचा जाने
दो !मामी सोची अच्छा है चोखो हो जावे पाप कटे जिव
को दोनो टेम रोटी बाणावन की झंझट खतम हो जासी
खसम ने तो बासेडो चाले पण इ टाबर का नखरा बडा
तगडा है जी लोकलाज खातर सहणो पडे तो धणी ने
आवाज लगाय बोली ओजी इरा जावणरी तयारी करो
और समझादो आज की तिज है पूनम तक पाछो आजावे
तो ठिक है और हरजी जा रहे हो हाथ मं संदूक माथे
पागडी सोणी जूती पांव में घाल जाता देख पाडोसी पुछण
लाग्या कठेसी जाओ हरजी तो हरजी जबाब ने जवाब
दिया। अपना जिवन सफल बनाने रामदेवरा जा रहा हुं।
और रामदेवरा पहुंच कर रामसरोवर के किनारे डेरा
डाल नहा धोकर नित्य पूजन करते हुये हरजी कहने
लगा हे रामदेवजी बाबा मै आपको एक पल भी नही
भुलाता, मुझपर दया करो। दो दिन बिते मनके भावों को
चढाता गया बाबा के चरणों में और याद आई मामा की
बात हरजी ने समाधी के सन्मुख कहा बाबा अब चलता
हुं मेरी अर्जी याद रखना और हो सके तो मेरे घर आना
। और पुजारी से कहा हरजी ने की मैने बाबा से अरजी
कर दी है आप भी मेरी ओर से नित्य अरजी करना और
बाबा को मेरे घर आने को कहना इस तरह मन के भाव
प्रभु के चरणों में चढाकर हरजी वापस अपने मामा के
घर आया । नित्यकर्म करते रामदेवजी का स्मरण
करता रहता था । एक दिन घरसे बकरीयॉ को ले घर
से निकला दोपहर का समय कपडे में बांधकर लायी
रोटी को खोला और बेर के झाड के निचे बैठकर खाना
खाया और एक पत्थर को तकिया की तरह सिर के
निचे लगा वामकुक्षी कर रहा था की एक घुडसवार
साधुवेश धारण किये आता दिखाई दिया तो उठकर बैठा
। लंबी लंबी दाढी मुंछवाला जोगी का भेश हाथों
कमंडल लिये घुडसंवार को उतरने पर पुछा हरजी ने ओ

जी थे कुण हो कठांसु आया तो जोगी ने कहा भुक लगी है। हरजी ने कहा बकरीया छोटी है । जोगी ने कहा कटोरा तो निचे पकडो , हरजी ने देखा बकरी के निचे कटोरा धरते ही दुध से भर गया जिसे देखकर हरजी अचंभीत हुआ । फिर जोगी ने कहा पानी पिलाओ हरजी ने कहा यहा पानी की कोई सुविधा नहीं, कुंआ सुखा पडा है । जीद करने लगे तो कमंडल लेकर जब कुए के पास गये हरजी तो देखा सुखा कुंआ पानी से लबालब भरा था कमंडल भर पानी ले जाता हरजी मनमें सोचा ये कोई साधारण जोगी नही जोगी पानी पिया उपर दुध पिकर थोडा दुध कटोरे मे रखा हरजी से कहा पिओ जैसे ही हरजी ने दुध पिया)

"तत्क्षण हरजी को दर्श दिये श्री रामदेव भगवान

आशा मनकी पुर्ण करी आगयी जान मे जान
चरणों में गया लोट हरजी कहे सुनलो दिनानाथ
हरजी पर थे मेहर करीं मं जोडु दोनो हाथ

(और कहने लगा हे प्रभु रामदेव अब नही छोडुंगा आपको चाहे जो हो एक बार मेरे घर अवश्य चलो तो जोगी ने कहा भक्ती करते रहो मै अवश्य आबंगा तो हरजी ने कहा भादवे महिने में आना मै खेतो में आपसे रखवाली करवाबंगा और खुब मिजवानी करुंगा। बारबार हरजी की बीणती सुनकर रामदेवजी बोले तेरे मनमे भक्ती की ज्योत जगी रखना और विश्वास मजबुत है तो एक दिन मै जरुर आबंगा तथा उसे निजीया धर्म की शिक्षा दिक्षा देकर झोली से एक कापडे का घोडा धोली ध्वजी देकर कहा हरजी सुणो नित गुगल घी की ज्योत लेना फिर क्या था हरजी चरणोंमे शीश रख कहने लगा प्रभु आपकी दया सदा बनाये रखना । नगर नगर जाकर ज्योत जगाबंगा आपके गुण गाबंगा और ऐसा ही किया हरजी ने जिससे चहं ओर किर्ती फेली नगर नगर में रामदेवजी के परचे लगे । ज्योत के दर्शन लेकर कई भक्तोंकी मनोकामनायें पुर्ण हुअी। इसी बीच हरजी जोधपुर पहुंचकर मसुरीया बाग में बाबा की ज्योत जगाई। कुछ लोगो ने जाकर सुना तो भक्ति रस मे डुबे किंतु कुछ विघ्न संतोशी लोगो ने हाकम हजारीमल के साथ जाकर राजा को कहा राजन एक पाखंडी कपडे का घोडा लेकर मसुरीया बाग में ठहरा है लोगो को लुट रहा है। राजा ने हाकीम हजारीमल को जांच के आदेश दिये। शाम को गोधुली बेला से ही भक्तों के झुंड मसुरीया बाग पहुंचे । सुर्यास्त की दो घटी बाद हरजी ने लाल सफेद वस्त्र बिछा बाबा का घोडा स्थानापन्न कर

पाटपुजन कर कलश थाप ध्वजा रोहण कर गणपती नवग्रह भोडशमात्रीका स्थानापन्न कर धुप दीप नैवेदय दिखा बाबा का आवाहन किया। बाबाकी आरती कीआरती पश्चात प्रसाद वितरण हुआ और सभी भक्त गण चाय फराल का आनंद ले रहे थे पश्चात पुनः हरजी के आसन ग्रहण करते ही भक्त गण मिठी मिठी तालीयों के रंग मे रंग रहे थे दुर दुर से पधारे भक्तों ने हरजी को भाव विभोर होकर सुना रामदेवजी के परचे का प्रसंग सुना रहे हरजी के व्यासपीठ पर चढ गये हाकम हजारीमल और अन्य उनके सेवक कहने लगे । किर्तन बंद करो और हरजी को कैद कर लिया, काल कोठडी में डाल दिया। दुसरे दिन थानेदार ने कहा इसकी जमानत कौन लेगा?तब हवालदार ने कहा रात भर ये किसी को पुकार रहा था पर दिन बीत गया कोई आया नही न जाने क्या होगा ?रात हुअी हाकीम हजारीमल के सपने में आये रामदेवजी पलंग से निचे गिर गया, घोडे की हिनहिनाहट सुनकर चरणो ं में पडा तो रामदेवजी बोले मेरे भक्त को कालकोठडी से निकाल मुक्त करो । हाकम और राजा ने कहा जी हुजुर । और हरजी को मुक्त किया। दुसरे दिन हरजी भाटी रवाना हुआ रास्ते में विश्राम कर रहे थे तो रामदेवजी प्रगट होकर बोले हरजी भक्तां का वंश की बेल सुखनो नही भगतां की खातीर भगवान आवं तो तु गावं गावं डोलं हैं ब्याव कद करंगो तो हरजी ने कहा प्रभु विवाह करुंगा तो पत्नी कपडे गहने रुपये पैसे मांगेगी मै कहांसे लाब्गा। और मुझे बेटी देगां कौन?रामदेवजी ने कहा ये सब मुझपर छोड दो और इस तरह हरजी को रामदेवजी ने सर्वसुख संपन्न किया। हरजी भाटी जब तक जिया रामदेवजी का ही नाम लिया।)

इतिः श्री राजेन्द्र शर्मा द्वारा रचित श्री रामदेव रामायण मध्ये हरजी भाटी परचा, हाकम परचा तथा प्रसंग विरामस्य।। बोलो रामराज कंवार की जय।।

बाबा की आरती

पिछम धरा सुं म्हारा पीरजी पधारिया
पिछम धरासुं म्हारा बापजी पधारिया
घर अजमल अवतार लियो लांछा बाई सुगणा बाई करे हर की आरती
हरजी भाटी चॅवर ढुले बैकुंठ में रामा होवे थारी आरती
गंगा रे जमुना बहे रे सरस्वती रामदेव बाबो स्नान

करे लांछबाई.....

वीणा रे तंबुरो घणी रे नौबत बाजे

ढोल नगाडा धणीरे नौबत बाजे झालर री झंणकार पडे लांछबाई.....

घीरत मिठाई बाबा चढे थारे चुरमो धुंपोरी महकार उडे लांछबाई.....

दुरारे देशासुं बाबा आवे थारे जातरी

दरगां आगे बापजीने नमन करे लांछबाई.....

आंधळीयाने आंख्या देवे पांगळाने पांव

बाबो बांझडीया रा पालना हलाओ जीओ लांछबाई.....

खम्मा म्हारा बापजीने सारो जुग ध्यावे

अजमलजी रा कंवरा रो भेद नही पावे

द्वारिका रा नाथ थाने सारो जुग ध्यावे

जैसी ज्यारी भावना वैसो फल पावे

हरि रे शरणांमे भाटी हरजी यो बोलीया

नवम खंडा में बाबो आप रमे लांछबाई.....

उँ जय अजमल लाला स्वामी जय अजमल लाला

भक्त काज कलयुग में लीनो अवतारा ओम जय अजमल लाला

अश्वन की असवारी सोहे केशरीया जामा

शिश तुर्रे हद शोभीत हात लिये भाला ओम जय अजमल लाला

डुबत जहाज तिराई भैरव दैत्य मारा

कृश्ण कला भव भंजन राम रुणीचे वाला ओम जय अजमल लाला

अंधन को प्रभु नेत्र देत है सुख संपती माया

कानन कुंडल झिलमील गल पुश्पन माला ओम जय अजमल लाला

कोढी जब करुणाकर आवत होय दुखीत काया

शरणागत प्रभु तोरी यो भगतन सुख धाया ओम जय अजमल लाला

आरती रामदेव बाबा की नर नारी गावे

कटे पाप जन्म जन्म का मोक्ष पद पावे ओम जय अजमल लाला

रमा उँ यामा आवजो कलजुग भये करुर
अरज करु अजमालरा सांभळजो हुजुर
केशरीयो बागो बण्यो तुररे तार हजार
पिछम धरारा बादशा रामा राजकुमार
रामा कहुं के रामदेव हिरा कहुं के लाल
ज्याने मिलीया श्रीरामदेव वाने किया निहाल
तनमन स्वच्छ बनायके धरे दृढ विश्वास
प्रेम से सुमरे जो राम को होय दुख सब नाश

अर्चना

श्री रामदेव दयालु दुख भय जगत करट निवारणम
कली काल प्रगटे कृपालु हे अजमाल किर्ती वर्धनम
नमो नेत्र दाता कुरट हरता वंध्या दोश निवारणम
नमो जीवदाता भक्ती त्राता सिध्दी दाता सुंदरम
डाली पुज्यम नेतलीशं श्री रामदेव भजाम्यहं
भक्त वत्सल देखुं हर पल दुरट दैत्य संहारणं
हे रामदेव दयालु दयानिधी सर्व बाधा विनाशकं
सब व्याधी टाल संभाल करे सदा भक्त पालन तत्परं
बुध्दी हिनं मंत्र हिनं मुल भव दुख पिडीतं
नमामी देव नमामी रामं देव वंदे जगतप्रियं

श्री रामदेव गायत्री मंत्र

उँ अजमल सुताय विदमहे रामदेवाय धिमही तन्नो
तंवर प्रचोदयात

पुश्पांजली

सुमन सुगंधीत सुमन ले सुमन सुबुध्दी विचार
पुश्पांजली अर्पण करु रामा राज कुमार
दुख आपद विपदा हरो करट करो सब दुर
रुणीचा के रामधणी आनंद दो भरपूर
मनोकामना पुरी कर दो लिले रा असवार
मैणादे रा लाडला नेतलरा भरतार
भुलचूक म्हारी माफ कर दो रख दो सिर पर हाथ
अजमलजीरा लाल थाने जोडूं दोनो हाथ
करी आरती आपकी करलीजो स्विकार
पुश्प चढावं चरणा माही रामधणी दातार
त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव
बोलो रामा राज कंवार की जय

सुंडसुडाला दुखभंजन सुण शिव गौरी का लाला
आओ थानं पथम मनाबं दाता हो मतवाळा
कोरसः- गणपती आओना गजानन आओना
सुख सम्पती का दाता आओ आज मं थानं मनाबं
भेज निमंत्रण परबती संग शिवजी नं बुलाबं
कार्तीकेय संग थे आजाओ कर मुसा की सवारी

एकदंत गज बदन विनायक लाज राखजो म्हारी
रुणीचा का रामधणी आओ कळजुग रा अवतारी
पेल प्रथम मं थानं बुलाबं टेक राखजो म्हारी

उँ यामधणी ओ खाटुवाला गाबं महीमा थारी
शीश का दानी आजाओना, जाबं मं बलिहारी
रामसा आओना उँ यामजी आओना.....२

राणी सती मेरी मात भवानी झुंझणुवाली आओ
भक्त राज राणा कं सागं तनधनजी न ल्याओ
सालासर का बजरंगी थे बेगा आन पधारो
महाबली हनुमान बिराजो २ सैं का संकट टारो

भवानी आओना ओ बजरंग आओना २
रामसा आओना - उँ यामजी आओना -
भवानी आओना -बजरंग आओना
गणपती आओना गजानन आओना

तर्ज- ओ फिरकीवाली
नेजाधारी आ लज्जा राख म्हारी कर लीले री असवारी
पधारो म्हारे आंगणा

थारां भगत करं हं थारी ध्यावना २ जीऽऽ
ओ परचाधारी विपदा मिटाओ सारी
थारां दर्श करं नर नारी आओना मनभावना
जी थारां भगत करं हे थारी ध्यावना

हो ऽ पीछम धरासुं म्हारा पीरजी पधारो-२
दर्श कराओ बेगा आओना
नेतलदे नं साग ल्याओ म्हारा बाबा -२
आओ मान भी जाओना
लांछा सुगणा करे आरती -२ बाबा हरजी चंवर ढुलावे
छबी प्यारी लागं जी म्हान न्यारी थारी छबी लागं हं न्यारी
आओना मन भावना थारा भगत करं....
ओऽ रुणीचा का रामराज पधारो-२ भगत बुलावं आओजी
तरस गयी म्हारी अखीयां ओ बाबा २ आओ जम्मो जगावां जी
बेगासा थे आन पधारो ऽऽ
नर नारी दर्शन नं तरसे जाबं मं बलीहारी
परचाधारी हरल्योना विपदा सारी थारां चरणा पं बलीहारी
पधारो मनभावनां थारो भगत करं हं थारीं ध्यावना

तर्ज- उडजा काले कावां

सांचा मनसुं देवुं बुलावो आभी जावोना
रुणीचा का रामधणी अब मान जाओना
ब्रत राख्यो मं आज थांको बेगा आओना

रुणीचे रा राजडी म्हानं दर्श कराओना
कोरसः- आओना म्हारां रामाधणी ओ बाबा थानं खम्मा घणी
एकही अरदास प्रभुजी एकही बीणती
सांचा भगता मं मेरी भी करलीजो गीणती
लुळलुळ लागुं पावं धणीया देरी करीयोना
मैणादे रा लाडला मेरी अरजी सुणल्योना.....
दर्श कर राजु सुखपावं ह्मारी भरीयोना
राम रुणीचा वाला म्होरी लाज रखीयोना
थामल्यो पतवार बापजी पार करियोना
भवसुं पार लगावन वाला आभी जाओना.....
"ज्योत जगाने जम्मा गाने भजन सुनाने आया
तेरे दरपे पे राजु बाबा शीश झुकाने आया
हो ऽऽ मै आया हुं ल
मै आया तेरे द्वारे रामाधणीया दे सहारे तेरे द्वार आया मै पहली बार आया
तेरे बालक हम सारे सुनले तु हम भी पुकारे
पुरा परिवार लाया मै पहली बार आया
नवमी के दिन है मै आया हुं एक आरजु संग मै लाया हुं
ऐ रामधणी सुनले बीनती तेरी ज्योत जगाने आया हुं
तेरी महिमा मै गाउं, मीठे भजनों से रिझाउं
फुलोंका हार लाया मै पहली बार आया...२
होऽ बाबा सजही गया दरबार तेरा बाबा पाया न कोई पार तेरा
भक्तों की सुन लेना बिनती हो जायेगा उपकार तेरा
सुनलो मेरी बिनती तुम, तुम्हारे द्वार आया मै पहली बार आया 3

जहां चौबीस कौम के आते यातरी सुख से करे बसेरा
वो धाम रुणीचा मेरा जहां रामापीर का डेरा
वो रामधणी जीनके सुमिरण से मिटजाये भव फेरा
है वंदन उनको मेरा-२
जहां निर्धन और निपुत्रीक भी मनचाहा वर पा जाते
जहां संत महंत क्या राव बादशा अपना शीश झुकाते
महिमा बाबा की सुनाते
जहां सोये भाग्य भी जग जाये हो जाये सुख का सबेरा
वो धाम रुणीचा मेरा जहां रामापीर का डेरा २
कोरस :- जय रामधणी जय हो रामाधणी
जहां बदले निराशा आशा में मुर्झाया मन खीलता है

दरबार में पग रखते ही वहां जो मांगो वो मिलता है
जहां स्वर्ग सा सुख मिलता है
हर इच्छा हो जाती पुरी अनुभव कहता हुं मेरा
वो धाम रुणीचा मेरा जहा रामापीर का डेरा
जीनकी वाणी से आत्मकमल को मीले ज्ञान की माला
संदेश दिया है आत्मज्ञान का लेकर हाथ में भाला
हर दुख भंजन कर डाला
जीनके द्वारे पर नर नारी का लगा ही रहता डेरा
वो धाम रुणीचा मेरा जहां रामापीर का डेरा.....3

तर्जः- फुल तुम्हे भेजा है...
रामधणी सरकार पधारो जम्मा की तय्यारी हे
आओ आओ बेगासा म्हानं चाव दरश को भारी है
मेवा मिसरी, खीर चुरमो घी को रोट बणायो जी
ब्रत रख्यो मं आज ओ बाबा जगमग ज्योत जगाईजी
आन पधारो दर्श दिखाओ भगतां सागं बुलाबंजी

धोळी ध्वजा फहरायो बाबा खम्मा खम्मा गाबंजी
सारा भगत थांरी राह तकं हं गुण थांका हो गाबंजी
रुणीचा सुं बेगा आओ संग लीले असवारी जी...

पाट पुजायो कलश थरपीयो धुप दीप नैवेदय दियो
घुडखोराक भिजादी मेहंदी अंतर मनसा जाप जिआ
गुगळ चिटकी घी कपुर की जगमग ज्योत जगाई जी
थे आओ जद काम बणेला बोलो कांई नाराजी है
रुणीचे रा राजा पधारो आस दरश की लागी है
देर करोना अब तरसाओ चरणां मं अरजी म्हारी
चादर इत्तर हार सुगंधी मेवो मिसरी लायो मं
पुश्प चढावां हार पैरावां भगत खडया सारा सेवा मं
रणुचा रा राजा अब तो मर्यादा खतम सारी

तर्ज- हमारी गली आजाना

आओना आओना २ ओ रामाऽऽ-२

आज करहीं रहा मनुहार ओ रामाधणी आओना-२

ओ रमा धणीया तु ही आजाना लीले घोडलीये को भी बुलाना

माता मैणादे अजमल को लाना राणी नेतलदे के संग मे आना

जल्दी हीं आना वापस न जाना विपदायें सारी हटाना

होय लीले पर असवार बाबा तुम आओना.....

चालु यहां पर गाना बजाना गाता है जम्मा राजु दिवाना

हरजी भाटी को संग मे तु लाना स्वारथीयों को भुल न जाना

रतना को लाना, लांछा को लाना कहता है राजु दिवाना

बाई सुगणा को लाना जरुर ओ रामधणी आओना

आओ करहीं रहा मनुहार राणी नेतल के भरतार

आओ लीले रे असवार तेरे भक्त करे मनुहार

मेरी नांव पडी मझधार आओ अजमल घर अवतार

आओ रुणीचा के सरदार आओ कलयुग के अवतार

तर्ज- हे नाम रे

हो ऽऽसुनीये बाबा रामदेवजी बिनती करु मै आज

लाज रखो मेरे दुख हरो रामदेव महाराज

ओ ऽऽ रामसा सबसे प्यारा तेरा नाम

ओ रुणीचा वाले मैणादे के लाले तुही लगादे बेडा पार

हे ऽ काम रे तुही बनादे बिगडा काम ओ रामाधणी
बाबा थानं खम्मा घणी सुणले रुणीचा का रामराज

होऽ चौबीस जाती पुजे तुझको हम सब तेरे सवाली
रामाधणी के द्वारे जाता आये कभी ना खाली
मै पुरी श्रध्दा से करता प्रणाम ओ रुणीचा.....

हों ऽ तु हम सबका वाली बाबा तेरी महिमा निराली
तेरी जय जयकार करु मैं भरदे झोली खाली
मेरी नैय्या पडी मंझदार रुणीचा वाले मैणादे.....
बीच भंवर में डोल रही है पार लगादे नैय्या
रामधणी मेरी बिच भंवर से पार लगादे नैय्या
होऽ मेरा बेडा पार करोना दो मुझको वरदान
तेरे बलसे बन जाते है निर्बल भी बलवान

तर्जः है प्रित जहांकी.....
मै लेता हुं तेरा नाम सदा श्रध्दा से शीश झुकाता हुं
ऐ राम रुणीचा वाले सुन मै तेरा भक्त कहाता हुं
हां मै लेता हुं तेरा नाम सदा

तु करदे बेडापार मेरा मै तेरा भक्त कहाता हुं होऽऽ
दर्शन दे कर भव पार तुझे तेरी महिमा मै गाता हुं
जपता ही रहुं मन में तुझको भजता ही रहुं मै सदा तुझको
ऐ राम ....श्रध्दा से शीश झुकाता हुं.....

मै जान गया महिमा तेरी मेरी नैय्या पार लगा देना
मै देखना चाहुं सुरत सिरत राम मुझे बतला देना
चरणों का दर्श करा दे तु मेरा बेडापार लगादे तु
यही बात यही बात सदा दोहराता हुं .....

ये राजु करे भक्ती तेरी और महिमा तेरी ही गाता है

जब विपदा से घिर जाता है बस तुझको ही तो बुलाता है

ये राजु करे बिनती तुझसे करता ही रहे अरजी तुझसे
ऐ राम ऐ राम तुझीको मनाता हुं.....

तर्ज- कहोना प्यार है

जो मांगोगे मिलेगा बाबा के दरबार में
रुणीचा दरबार में बाबा के दरबार में
नहीं दानी कोई दुजा बाबासा संसार में ऽऽऽ
कोरस :- चलो दरबार में रुणीचा दरबार में ...२

जो भी जपे नाम तेरा मालामाल हुए वो
संकट में जिवन था सब खुशहाल हुए वो
सुन रामा मेरी नैय्या क्यों पडी बिच मझधार में

कानोंमे कुंडल है गल बैजन्ती माला
हाथों में भाला तेरे करता जगमें उजाला
है अद्भुत बडी शक्ती लीले के असवार में .....

दुज दसम उपवास करो बाबा खुश हो जाते
बदले में बाबा से मनवांछीत फल पाते
वर देना राजु को रहता तेरे प्रचार में.....

तर्ज- ओ आओ आओजी

ओ आओ आओना ओ रुणीचा का राम म्हे जोवां थारी बाट घणी

ओ आओ आओना नेतल का घनश्याम म्हे जोंवा थारी बाट घणी

तन केसरिया जामो हात में चमकं भाल
अब थे देर ना करियो रामा बेगा आओ चाल
भगत यो दर्शन लेसी हो जासी निहाल
लांछा सुगणा हरजी भाटी भाणुडा कं साथ
मां मैणादे अजमलजी रतनो राई को साथ
दे दो दर्शन जोडु मं दोनु हाथ.....

दाल चुरमो भोग लगांवा लाडु भरभर थाल
अंतरमन सुं याद करुं मं लिनो म्हानं संभाल
थारो बैठया बैठया कर ही रहया गुणगाण

यो राजु थानं याद करं हं रुणीचा का राम
भक्त सारा रह तक रहया छोडो सारा काम
थारी भक्ती को मांगु वरदान.....

तर्ज- बालासा थानं

ओ बाबा थानंडओ रामसा थानं कुण सजायोजी
ओ पीरजी थानं कुण सजायोजी
म्हारो हिवडो हरलीनो थारी सुरत मतवाली ५
म्हारो मनडो हरलीनो थारी मुरत या प्यारी बापजीऽऽ
कोरसः- कुण सजायोजी ओ पीरजी.....

केशरिया बागो थांप सोवं हं बनडा सा लागो मनडो मोहंजी
माथा पं मुकुट सोवं हाथां मं भालोजी.....बापजी

बाई लांछा सुगणा आरती उतारं जी.....२
थारो भक्त हरजी भाटी कंख्या चंवर डुलावजी

थारे गल फुलां री माळा सोंवजी.....२
खुब इत्र उडांवा हां थारी ज्योत जगावांजी.....२

देखो डालीबाई ीश झुकावंजी.....२ लीले री सवारी अरजी सुणल्योजी.....२
भानुडो अमरसिंह तो चानं लाड लडावं जी...
सारा भगत खडया द्वारे थानं धोंक लगावंजी

तर्ज- स्वतंत्र
आओ आओना गजानन प्यारा आओ भक्तांरा रखवारा
होऽऽ रणक भंवर गढवास करो थे रिध्द सिध्दरा भंडार

शिवशंकर का प्यारा लाल कोई पाय सक्यो ना पार
थांकी किरपांसु जी थांकी दयासुं दुख दुर होवं म्हारा आओ
होड पारबती का लाल पधारो मुशक रा असवार
नवतीधी का दाता हो थानं पुजं सब संसार
आओ कश्ट निवारो म्हारां आओ.....
दुंडदुंडाला गणपत हो थानं सुंड निराली सोंवं
ठुमक ठुमक जद नाच करो सुर नर जन मनडो मोहं
चमचम चमक रहा भंडारा आओ.....
.

पांव मं पायल कान मं कुंडल कुमकुम तिलक लगावं
पारबती मां लाड लडावं □ोभा बरणीनं जावं
थाकी स्तुती करछं देव सारा.....

लाडु बतासा भोग लगंह सिंदुर चढे अपार
गांव गांव उत्सव यज्ञ माही पुजं हं नार
यो राजु यो विक्रम जी सागर चरण पुज हं जी थारां .....

बाबो धोळी ध्वजा रो धणी रामदे दौडयो दौडयो आवं.....२

दौडयो दौडयो आवं २ बाबो ऽऽ यो भगतां की लाज बचावं हं

टेर लगाई अजमलजी खुद द्वारकानाथ पधा-या

कुंकुम पग मांडया आंगणीये केसर खुद बरसाया

पाळणीये मं अन पधा-या होऽऽमॉ न अचम्बो आवं हं

रुपो दरजी याद कियो जद दौडया दौडया आया

कालकोठडी सुं रुपा दरजी न खुद मुक्त कराया

ारण पडया की लाज बचावं २ दौडयो दौडयो आयो हं

सांतलमेर का दुखीया द्वारे एकही अरज लगाया

बाळकनाथजी करी कृपा खुद भालो हाथ दिलाया

भैरुडां न मार गिरायो २ जी जंजाळ मिटायो हं

लाखो बिणजारो अरज लगाई दौडया दौडया आया

लाखो झुठ वचन फरमायो मिश्री रो लुण बणाया

गुन्हो माफ कर दियो आखो लुण की मिशरी बणावं हं

बाण्यो बोयतो टेर लगाई समदर माही आया

चौपड खेलत बांह पसारी डुबत झाज

तिराया

बोलं जंग्या चाल वांकी सारी बाधा मिटावं हं

रतनो राई को याद क-यो तो दौडया दौडया आया

उंदो लटक्यो कुंआ माही सारा फंदा छुडाया

मुक्त हुयो रतनां राई को २ बाबा का जस गावं हं

सुगणा की सुण टेर दयालु पलमं आन पधा-या

भाणुडा नं जीवत कीनो आंगणीये दौडाया

रुमझुम बाज्या पैंजणीया बाबो सबका करट मिटावं हं

भाभी बोली देवरजी अब सुणल्यो विपदा म्हारी

बछडा नं जीवत कर देओ जाणु महिमा थारी

चाटण लाग्यो बछडो मां नं जै जै कार लगावं हैं

सेठाणी जद टेर लगाई दौडया दौडया आया

धड सुं ीश जोड अवतारी परचा घणां बताया

जीवनदान दियो सेठ नं सैं न अचम्बो आवं हं

राजु थानं करं बीणती बात सुणो एक म्हारी २

सांचा परचा देवं बापजी कळजुग रा अवतारी

जद भी याद करुं बाबा नं यो दौडयो दौडयो आवं हं

म्हारो रामधणी दातार बाबो सबकी लाज बचावं

“सुमीरण करल्यो रामदेवजी को सुणो सकल नर नार

यो राजु थानं करं बीणती अरजी बारंबारल

तर्ज- सांची कहु तोहरे.....

ज्योत जगाबं जिसका जम्मा जगाबं
हरपल रिझाबं जिसकी महिमा मै गाबं
वो है रुणीचा का राम भैय्या जी है नेतलका भरतार भैय्या
वो है निराला उसकी महिमा है न्यारी
जगमें है ख्याती है पल पल परचाधारी
मेरा तो वो ही घनश्याम भैय्या जो है रुणीचा का राम भैय्या
जो भी इनके द्वारे पे आता बाबा की चौखट पे □ीश झुकाता
श्रध्दा जगाता मनमे भाव सजाता कहता मै मनवांछित फल भी है पाता बनाता ज्यो हर बीगडा काम भैय्या वो है रुणीचा का राम.....
.....
झुठ ना सुहाता इनको चोरी ना भाती इनको पुजे है जगमें हर कोई जाती
विश्णु के अवतारी महिमा है भारी अब क्या सुनाबं निश्कलंक नेजाधारी
अजमल के घर हुए अवतार भैय्या वो है रुणीचा.....
जाना चाहे राजु दरपे ओ भैय्या पार लगाना चाहे जीवन की नैय्या गुणगाबं मै इनके भजन सुनाबं मीठे मीठे भजनो से इनको रिझाबं
कर देगा मेरा बेडा पार भैय्या मुझको इन पर है विश्वास भैय्या सुन लेंगे
अरजी हमार भैय्या मरजी है अब तो तोहार भैय्या

तर्ज-ये दुरा नहीं जाने रे
बाबा सब जाणं तु सब जाणं थानं के बतावांजी...२
राजस्थान को राजो तु रणुचा को महाराजो तु
थे तो पलपल परचा देवोजी सुणो रामापीर जी.
.....२
म्हाने भादवां का मेला मं बाबा रुणीचा आणो हं
सागं मां न बाबुजी नं सारा टाबरानं ल्याणो हं
म्हारी खरची म्हानं भेजोजी सुणो रामापीरजी
जात जडुलो देवांगा थांकी ज्योत जगावांगा
दाळ चुरमो बणाकर कं भगतानं जिमावांगा
जम्मो जगरातां जगाणो हं सुनो रामापीरजी
थारी □रण मं आयो हुं मन का भाव सुनाबंजी
आस करदिजो पुरी थानं धोक लगाबंजी
बाबा अब ना देर लगाओजी सुणो रामापीरजी
राजु करही रह्यो अर्जी राखो म्हारे पर भी मर्जी
थांसु कुछ ना छुप्यो दाता भेजो थोडीसी थे खर्ची
तु हं साचो सारो जग जाणं सुणो रामापीरजी
चालो चालो मं तो चाल्योजी रुणीचा का मेळा मं

होऽ रामदेव बाबाच्या दर्शनाले मी जाईन
अन दर्शन बाबांच्या चरणाचे मी बी घेईन.....
२

लेकराईले संग घेईन धनीच्या संग मी जाईन
दर्शन बाबाचे घेईन लोटांगन बी घालीन
घरुन चुरमा २ प्रसादी बनवुन नेईन.....
दर्शन
प्रसाद भेटतो वाटेला तेथुन वंदीन मी बाबाला
कपडयाचा घोडा शिवलेला चढविन रामा धणीयाला
मखाने मिसरी नारळ संग नेईन..... दर्शन
कपाळी कुंकु लावीन, चादर चांगली चढविन
सुगंधी इत्र उडविन अन हार फुलांचा वाहीन
पांढरा झेंडा कमची लावुन नेईन
अन बाबाच्या चरणी मस्तक आपुले ठेवीन
एकच अरजी करीन मी सौभाग्य नांदो हे मांगीन
हरीखुशी तच राहीन पतिच्या खांदयावर जाईन
एकल माझी चरणी विनती मी ठेवीन
राजु म्हणे मी बी जाईन बाबा जवा मले बोलाविन
फिकर करा माझी सांगीन महिमा बाबाची गाईन
जम्मा जागरण करिन तिथ लोटांगन बी करिन

लेकराईले अन माहया बायकोले संग नेईन
अन बाबांच्या चरणाचे दर्शन मी बी घेईन.....

रामाधणी रामाधणी रुणीचा का राजा रामाधणी
आओना बाबा थानं बुलाबं आओना दाता थानं मनाबं
ओ बाबा थानं खम्मा घणी.....होय...
देखो ना थारी ज्योत जगायो ज्योत जगायो रे जम्मो ना यो
महिमा अपरंपार धणी
चुरमा को भोग लगाबं मिशरी खुवाबं रे खीर खुवाबं
आरेगो ना रामाधणी.....
नरनारी दर्शन नं आया मनडा की सब बात बताया
काटो ना दुखडा खम्मा घणी
राजु यो थारी महिमा सुणावं महिमा सुणावं रे जम्मा जगावं
बाळक अपणो जाणो धणीऽऽ हे ऽऽ
तर्ज - गाडीवाले मुझे....

रुणीचा वाले मुझे बुलाले अपने रुणीचा धाम
अरज मेरी सुन लेना ओ राम दरश मुझे दे देना
राजस्थान का राजा तु सब देवन सिरताजा तु
रुणीचा का महाराजा तु सारे सब हीत काजा तु
आजा मुझको दर्श करादे मेरा बेडा पार लगा दे
अरजी बारंबार दर्श मुझे दे देना ओ राम.....
जब से तेरा ध्यान धरा मिटा भरम सब भेद मेरा
मै भी बाबा भक्त तेरा करदे बेडापार मेरा
एकही बिनती सुनो दयालु कर दे भव से पार.....
मेरा सिरजनहार तुही मन विणां का तार तुही
मेरी नैय्या की पतवार तुही माता पिता सरकार तुही
अंतरमन मे भक्ती जगादे अंधकार भगा दिप जगादे
थामले पतवार दरश मुझे.....
राजु तेरा बालक है बाबा दया करो अपनाओना
काम कोध मद लोभ में डुबा अंतर्यामी संभालोना
रण पडा मै रामधणी तेरे जोडु दोनो हाथ

तर्जः- जय जय चंडिके दुर्गा
आओ रुणीचा का राजा आओ रामदेव महाराजा
बाज्यां ढोल नगाडा बाजा बेगो आजा बाजं ढोल नगाडा.....

जद भी थांका गुण गाबं मनवांछित फल पाबं
ओ धणिया सुख □ांती पांबं
याद घणी जद आवं थांकी रुणीचा जाबं
ओ बाबा मं रुणीचा आबं
खम्मा खम्मा मं थानं सुणाबं मनडा की बात बताबं
थारी आरती3 प्रेम स गाब हो मनाब.....3
रेळी मोळी अक्षत चंदन ल्यायो फुलांको हार
थारे खातर ल्यायो मं हार
ढोल नगाडा नौबत बाजा झांझर री झणकार
आओना लीले रा असवार
मेरा सब अपराध स्विकारुं रामाधणी मं थानं पुकारुं
थांको जम्मो 3 मं थानं सुनाबं बेगो आजा
बळकीयो बणकर आओ तो खुआबं थानं खीर
आओजी आओ रामापीर
नरनारी दर्शन नं तरस बदल दिजो तकदीर
जी थे तो हो पीरा का पीर
आओ राजस्थान का राजा आओ रामदेव महाराज
देखो बाजं 3 रहया हं बेगो आजा

तर्ज:- सावन का महिना
रणुचा रं राज आओ भगतां का सम्राट
बोलोना कद आओगा मं उभो जोबं बाट

ना मं नरसी मीरा ना ही कबिरा
सांचा मनसु याद करुं मं गुणगाबं थारा
थांरा ही तो गांव को मं सीधो साधां जाट.....
....

जद भी थे रामा म्हारें घरा नं आओला
सुखी रोटी राबडी कं सागे मं खिलाब्ंला हॉडड
फाटयोडी कांबळ ओढोगा मिलसी टुटी खाट.
.....
गरमी, सरदी,चौमासा मं दिनडा, बिल्या रमा,इ आशा मं
रामधणी आ जासी देसी सारा दुखडा काट....
.....
अरें आणो होसी तो रामा सुणले या अरजी
नही आवो तो बाबा थांकी मरजी
तु होसी रुणीचा को राजो मं मेरो घरको लाट
बोलोना कद आओगा मं उको जोबं बाट
राजु यो बाबा थारां हर जस गावं
मिठा मिठा भजनासुं बाबा थानं रिझावं
तेरे भारोसं हो गया जी म्हारा ठाट बाट...
बोलोना

तर्जः- छोटी छोटी गईया
मैणादे रा सुत थारी लीला है कमाल.....२
प्यारा लागोजी म्हानं अजमल लाल.....२
काहे की सवारी कुणसा फुलां की माल
कांई हाथां म ध-यो अजमल लाल.....बोलो
लीलारी सवारी गल बैजंती माल.....२
भालो हातां मं ध-यो अजमल लाल.....२ होजीडड
माथां प मुकुट सोवं टीको है भाल

तंदुरो बजावं म्हारो अजमल लाल........होजी

मेरी मन विणा को तार हं जी रामा राजकंवार

रामा राजकंवार राणी नेतल रा भरतार..........

नाम जपो श्री रामधणी को सब संकट कर जाई

निसदिन यांको सुमिरण राखो पलमं करं सहाई

पीरां को यो पीर कुहावं २ ऽऽ होऽ विश्णु को अवतार .....

मानुश योनी मिली भाग्यसुं पलपल बिल्यो जाई

अब लेशां तब लेशां करता जनम खतम होय जाई

रामापीर की जय बोलो २ ऽ जय अजमल घर अवतार

बह्‌म मुहुर्त मं ध्यान लगाओ बेडोपार हो जावं

टेर सुणं भगतां की दयालु दौडयो दौडयो आवं

भवसु पार लगावन वाळो २ यो रुणीचा रो सरदार

चरणांका दर्शन म चाहुं सुणल्यो नेजाधारी

सारी विपदा हरल्यो दाता सांचा परचाधारी

राजु की अरजी सुणलीजो २ ऽ लीले रा असवार

लीले घोडे रा असवार करां थारी मनुहार २

बाबा म्हारे घरां आओजी बाबा म्हारे घरां आओजी

शीश पं मुकुट बिराजे तुर्रा किलंगो हाथ मं भाला..........२

कान मं थारे कुंडल सोवं गळ बैजंती माला
शोभा बरणीन जाय देख मन हरशाय बाबा..
.....
पीठ पं ढाल हेवंजी थांकी लीला की असवारी.....२
धोळी लाल ध्वजा भाला मं सांचा परचाधारी
राणी नेतल रा भरतार आओ रामा राज कंवार बाबा.....
भक्तारां आधार बापजी अजमल घर अवतारी
महिमा गावं राजु सुणावं हरल्यो विपदा सारी
मं भी करु गुणगान थांका चरणा को ही ध्यान.....
दीना का थे नाथ कुहावो निकलंग नेजाधारी
महिमा थारी सैनं सुणाबं पुजं दुनिया सारी
आओ रामधणी दातार कळजुग मं लिनो अवतार.....

"स्वागत गीतल तर्ज:-
पचरंगी पोचो दरबार सांचो २ थारो स्वागत बारंबार
पधारो बाबा रामदेवजी म्हारी सुनही लिया
मनुहार बिराजो बाबा रामदेव आओजी थानं गंगा स्नान करांवा चरण धोय चरणामृत पांवा
थानं बिठावां मृगछाल बिछावां
तिलक लगावां थानं हार पेरावां बाबा सेवा करो स्विकार बिराजो

इत्र चढावां थापं सुगंधी बरसावां मेवा मिशरी को भोग लगांवा

तुर्रे किलंगी सोणो मुकुट लगांवा
चादर चढावां बाबा छत्तर चढांवा बाबा कियो घणो उपकार

बिराजो दाता थारी ज्योत जगांवा ज्यो त जगांवा जम्मो जागरण करांवा
मनडा की सारी बातां बतांवा लुळलुळ चरणामं □ीश झुकांवा
बाबा धोंक लगांवा बारम्बार बिराजो बाबा रामदेवजी

बेठोना बाबा थारी महिमा सुणावां रामाधणी की जयजयकार लगांवा
मिठा मिठा भजनांसु थानं रिझावां र ा जु केवं हं जिवन सफल बणावां
बाबा अरजी करो स्विकार बिराजो बाबा रामदेवजी

तर्जः- म्हारो बेडोपार लगाय दिजो
रुणीचा का राम सुणल्यो नेतल का घनश्याम
म्हारो बेडो ३ जी पार लगाय दिजो रुणीचा का राम
बाबा लाज रखोना अबकी म्हारी नांव भंवर म अटकी
अटकी नं ३ पार लगाय दिजो नेतलदे का □याम
बाबा एक आसरो थारो नहि और कोई रे म्हारो
विपदा मं ३ साथ निभाय दिजो नेतलदे का □याम
घर घर मं चर्चा थारी थे दिन दुखी हितकारी
ई बालक २ नं अपणाय लिजो नेतलदे का

□याम
बाबा इतणो नहीं बिसारो गलती नं मेरी सुधारो
बीती बातां 3 नं भुलाय दिजो नेतलदे का
□याम

"शरीर विज्ञान कहता है की हमारे मस्तिस्क भाग से जितनी नाडीयां हाथ में आती उतनी □रीर के किसी भाग मे नही जाती, ताली बजाने से दिमाग तेजी से दौडता है, बुध्दी विकसीत होती है इसीलीये ऋशी मुनीयों ने ताली के माध्यम बनाये भजन किर्तनल

तर्जः- ओ फिरकी वाली
आओ आओ जिमो थे भोग लगाओ
जिमो थे म्हानं जिमाओ हं छपपन भोग तय्यार जी
थारां टाबरीयां करं मनुहार जी हो सारी रसोई धरी हं तय्यार जी
बाबा आओ आरोगो भोग लगाओ
रुच रुच कं खुब खाओ यो राजु करं मनवारजी
सारी रसोई धरी हं तय्यार जी
श्रीफल, ऋतुफल, लाडु बताशा दाळ और बाटी चुरमो
नारेळां की चटणी रसमलाई चावळ □क्कर मं घी घणो
आओ जिमाबं थानं मनाबं बाबा लु ळ लु ळ धोंक लगाबं
आओ आओ जीमोजी भोग लगायो मं करुं घणी मनुहार जी.....
पंचामृत संग पंजेरी बणाई, बाजरा की रोटी

घणो दही ल्याओ
तुलसीदल उपर ही ध-यों हं, जाणो प्रसादी तु पायो
खीर बुलाबं मिश्री ल्याबं२ बोलऽ नाऽऽ की बीडो पान लगाबं
परचाधारी सांचा परचा बतलाओ किस्मत म्हारी चमकाओ
हं छप्पन भोग तयार थारं टाबरीया करं हं मनुहारजी

तर्जः- बतादे पुरवइया
अरे कोई तो बतादो २ रमापीर कब आयेगा-२
रुणीचा का राजा कब दर्श करायेगा कोई तो बता दोऽऽ
कभी ना कोई खाली लौटा रामधणी के दरसे
चरणों के दर्शन को रामा अखीयां मेरी तरसे
मुरझायी जिवन की बगिया कब आकर महकायेगा
रुणीचा के रामाधणी के परचे सबको मिलते
सच्चे मन से जो भी जाये मनवांछित फल मिलते
किस्मत के मारें की कब झोली भर जायेगा.....
तेरी ज्योत जगाई हमने जम्मा तेरा जगाबं

नरनारी दर्शन को तरसे आओ तुम्हे मनाबं
पलपल जपता तेरा नाम ही कब तु दर्श करायेगा
सच्चे मनसे राजु बुलाता आओ रामापीर
सागर पुनम संग मै बुलाबं सुगणाबाई के बीर
मै चाहुं भवसागर तरना, क्या भवपार करायेगा

तर्जः- अपने आंचल की
अपने आंचल की छैय्या मे मां तु मुझे सुलाया कर
मॉ लोरी की जगा तु रामापीर के भजन सुनाया कर
जै बाबा की बोलके मुझको रोज तु सुबह्ा जगाया कर
मॉ लोरी की जगह रामसापीर के भजन सुनाया कर

बहोत सुनाये तुने मुझको किस्से राजा रानी के
क्युं ना सुनाती मुझको निसदिन परचे हरजीभाटी के
कौन है लांछा कौन थी सुगणा ये बाते समझाया कर

सच कहता हुं मै ना मांगु तुझको कोई खिलौना मॉ
मरुधर मे कहा बसे रामसा ये मुझको बतलादे मॉ
कहा रुणीचा धाम निराला ये मुझको बतलाया कर

थामले मेरा हात ओ मैय्या प्यारसे अपने हाथों में
जम्मा जागरण सुनना चाहुं होता है जो रातो में
जाना चाहुं मै भी वहांपर पप्पा को समझाया कर

रामदेव बाबा के दर्शन पाने को जी करता है
ज्योत जगाकर जम्मा जगाने को मेरा मन करता है
अपने बेटे सागर का ये कहना मान भी जाया कर

तर्जः- बडी दुर से आये है
बडी दुर से आये है ओ बाबा तेरे द्वारे आये है
मनमे कामना लाये है हॉ पैदल तेरे दरमे आये है
फुल माला ऽऽ भी संगमे लाये है ओ बाबा.....

तुम सबकी सुनते हो हमारी भी सुनोना
भगतों की इच्छाए जान लोना
यही अरजी यही बिनती एक अरजी संग में लाये हो.....

बेटा तेरा ये राजु भी गुण तेरे ही तो गाता
मिठे मिठे भजनो से है रिझाता हम अपना शिश झुकाते है.....

परचाधारी की जय नेजाधारी की जयजय बोलो ऽऽ
कलीयुग अवतारी की जय जय जय,
भालाधारी की जय बनवारी की जय जय
बोलोऽऽ लीले के असवारी की जै जै जै
रामापीर की जय सुगणा के बीर की जय जय
बोलो नेजाधारी की जय जय जय
नेजा फहराओ थे रामधणी की
संकट कट जासी नेजा फहराओऽऽ ओजीऽऽ
संकट कट जासी रे साराऽऽ संकट कट जासी रे
थारा भाग बदलजासी नेजा.....

महिमा अपरंपार ध्वजा की एकबार लहराओजीडऽ
काला काला दुख का सारा बादल छट जासी नेजा.....
काम काज मं विघन पडे तो धोळी ध्वजा फहराओजी
रमाधणी दातार यो सारी बाधा हरलेसी नेजा.....
लाल सफेद ध्वजा लहराओ टाबर टिंकर पास्योजी ऽऽ
आंगणीये थारे फुल खेलसी कुणबो बढ जासी नेजा.....
पचरंगी को ध्वजा चढाओ लाज बचावण आवंगो
करमा को भी लेख मिटादो बाबो डट जासी नेजा.....

तर्जः- हेलो जी सुणो म्हारा राम रमैया

हेलो सुणलीजो ओ राजा अजमल का लाला-२
द्वारिकानाथ बाबा रुणीचे वाळा हेलो.....

राजु थानं याद करं हं सुध म्हारी ले जाओ ओ बाबा
मन्ने काम क्रोध दिन रात सतावं मोहमाया हरजाओ
सुणो करुण पुकार आओ रामा राज कंवार
यो भगत भी थानं पुकार रह्यो.....

मनका भाव सुनावण खातर भजन मं थारा गाउं
सुनलीजो मेरी अरज रामसा मन की

बात बताऊं
करदो भवसागर सुं पार हो जासी म्हांपर उपकार
थारों सुमिरण मं दिनरात करुं....

याद करुं थांको रुप रामसा मन आनंद अती होवं
गाऊं जम्मो जगाऊं तो बाबा मन की कली खील जावं
धारू उर विश्वास पुरी करजो मेरी आस
म्हारो मनडो थानं पुकार रहयो.........

थारो कांई घटजावं बोलो जो भक्तानं कुछ देवो
आठ प्रहर जपां नाम तिहारो और बोलो कांई लेवो
करदयो छोटो सो यो काम सुणल्यो रूणीचा का राम
सारा भगत भी थानं पुकार रहया......

तर्जः- ओ म्हानं जावण दयो
ओ म्हारी कुटीया मं आवो रामाराज जीमांशु थानं मिजवानी
जी सांचा मनसु बुलाऊं रामापीर जीमांशु थांन मिजवाणी
उनी कंबल पर थे बिराजो सेवा करूंलो भरपुर
चरण धोय चरणामृत लेशुं लेशुं जनम

सुधार.....

दाळ चावल हं गवांका फलका बेहतर बण्यो हसांग
पुडी पकौडी और काचौडी मुठडी बणाई जोरदार.....

लाडु पेडा और जलेबी फीणी हं भरपुर
मोतीचुर मगद का लाडु आनंद ल्यो भरपुर
मीठा चावल पुडी हं मसालेदार जीमाव थानें.....

सीरो लपसी मालपुवा और चबकी हं भरपुर
भाटरस भोजन बण्यों हं दाता कैरी को ल्यायो हुं अचार .....

तळदिया पापड और खीचा को खाद चखोना हुजुर
मावो मिठाई मस्को काजु कतली रखी हं भरपुर.....

दुध दही सुं बण्या रायतो आजाओ अवतारी
छप्पन भोग ध-या रह जासी आओना परचाधारी.....

ठंडो जल जमुनारो लिजो बिडलो पान चबाय
राजु करं चाकरी थारी चरणा मं राखजो लिपटाय
हो ऽऽ सागर थानं याद कर हं रमा

राजकवांर
भोग लगाओ जीमो बापजी नेतल रा
भरतार पधारो म्हारा रामा राजकंवार

तर्जः- थाळी भरकं

चुरमा को भोग लगावं करू घणी
मनुहारजी
रामधणी म्हारां भोग लगाओ रामा राज
कंवारजी म्हारां
ल्यायो श्रीफळ और बतासा मिसरी भरकं
थालजी
चौकी उपर आन बिराजो कळजुग रा
अवतारजी
आओ जीमावं खीर चुरमो लुळलुळ लांगु
पांवजी.....

नारेळा की चीटकी खाओ संग मखाणा
घेवरजी
पंचामृत संग तुलसीदल को स्वाद घणो
चखलेओजी
घी को रोट बणायो दाता ऽऽ लीले रा
असवार जी

मीठा मीठा भजन सुणावं धुप दिप तय्यार
जी
पान को बीडो लगाय ध-यो अब आरोगो
दातारजी
करूं आरती थारी बाबा नेतलरा
भरतारजी
आओना म्हारा रामधणी मं करू घणी

मनुहारजी

“ लीलो घोडो नवलखो ऽऽ ल्यायो मोत्यां जडी लगाम
पिछम धरा रं बादशा आया रूणीचा का रमल
हो ऽ पिछम धरांसु म्हारां पीरजी पधारीया

तर्जः- मेंहंदी रची
भाले चमकं हाता मं तुर्रो किलंगी माथा पं
म्हारा रामाराज कंवार थानं खम्मा घणी
रामा कळजुग रा अवतार राजा रामा धणी
लीले री असवारी हो, महिना रूबसुं न्यारी हो
रणी नेतल रा भरतार थानं खम्मा घणी म्हारा रामा.....

थे कहो तो बाबा थारो घोडलीयो बणजाउं मं
घोडलीयो बणजाउं सै न थांका दर्श

करां मं
पगल्या मांडो आंगणीये, झुलो म्हारे पालणिये
आओ करूं घणी मनुहार म्हारा रामाधणी.
.....

ढोल मृदंग नगारा बाजं, थांकी ज्योत जगाब्जी
नौबत घणा मंजीरा बाजं धोळी ध्वजा फहराब्जी
हर जस गावं नर नारी महिमा थांकी हं न्यारी
रामा अजमल घर अवतार थानं खम्मा घणी

खुब सज्यो दरबार ओ दाता थांको जम्मो जगाब्जी
महिमा थारी गाबं बाबा थानं भजन सुणाब्जी
मं हुं थारो बालकियो बाणनो चाहुं सेवकीयो
या अर्जी करो स्विकार राजा रामाधणी....
...

थे कहो तो बाबा थारी मोजडी बणजाबं मं
मोजडी बण जाबं थारा चरणा मं लगजाबं
दिन भर सागं -हेब्लो भवसागर तर जाब्लो या अरजी करो स्विकार

चाहो तो रामा हरजी भाटी बण जाबं मं
हरजी भाटी बण आबं थारी सेवा मं रम जाबं मं
जम्मो जगाबं राता मं रमजाबं थारी बाता

मं
म्हारो बेडो लगाय दिजो पार म्हारा रामाधणी

तर्जः- मीठे रस सुं

लीला घोडा पं सवार बाबो प्यारो लागं
सबसुं न्यारो लागं
जी म्हानंड सोणो घणो अजमलजी को लालो लागं
तन केसरीया जाओ साजं तुर्रा मं तार हजार
हाथ मं भालो चमचम चमक रामधणी दातार
महीमा रामधणी की म्हान सबसुं न्यारी लागं.....

रूणीचा मं धुम मचावं यो तँवरा को छोरो
पलपल माही परचा देवं जीत लीयो मन मेरो
म्हानं रूणीचा को यो राजो महाराजो लागं.....

रामदेवरा जावं जो हर साल रूणीचा धाम
वांकी विपदा दुर करं ह रूणीचा को राम
भुतबाधा निसरं दुख दाळध्दर दुर भागं.....

दुज दसम को व्रत जो रखं सांचा मनसुं ध्यावं
राजु केवं रख भरोसो मनवांछित फल पावं

ध्याओ रामधणी नं देखो सुत्या भाग्य जागं.....

यो राजु तो ब्रहम मुहुर्त मं लगावं थांको ध्यान
ज्योत जगावं जम्मां गावं करतो -हेवं गुणगान
एक कोशीस करल्यो नैय्या म्हारी पार लागं
मझधार त्यागं जी म्हान सोणो घणो.....

हो मं तो राम रूणीचा जायु ए मॉ-२
रूणीचा मं म्हारो मन लागै ऐ मैय्या

मारवाड सुं भगत पधारं गुजराती भी आवं मॉ
आंधा पांव आख्या भाई लुला दौडक जावं
मं भी लुललुळ धोक लगाबं ए मॉडड

बांझडीया भी आवं द्वार कोठी पंगु आवं मॉ
परचा लुटावं परचाधारी सुनी गोद भरावं
सांची जगमग ज्योत जगाबं ए मॉ

राम सरोवर सामं करूगो रामायण को पाठमॉ
नवनीधी मं पाबं सहज ही मील सिध्दीया

आठ
वांका चरणा म धोक लगायुं ए माँ ऽऽ

राजु यो मनका मंदर मं रामधणी नं
ध्यावं माँ
ज्योत जगावं जम्मो गावं बाबा का जस
गावं
सारी रात मं जमलो जगायुं ऐं माँ....

और मै माँ की आज्ञा ले रूणीचा गया
पोकरण आराम कर दुसरे दिन सुबह
पैदल चल एक संघ के साथ एक धोळी
ध्वजा और एक फुलों का हार लेकर गया
बाबा के द्वार पहुंच कर क्या कहा?

चालो रे सब भगतो मिलकं रूणीचं जावां
चालो राजा रामधणी का दर्शन करं आवा
राजु थानं करं बीणती बेगा आओना
सुणल्यो मेरी अरजी भगतों मान
जाओना
कोरस :- मिलंगो म्हानं रामाधणी
बोलांगा थानं खम्मा घणी
सुरज सामं बण्यो देवरो बैठ्यो रामधणी

 शिश झुकावांगा दरगापं बोलो खम्मा घणी
 चादर चढावांगा दरगापं गुण भी गावांगा
 रमापीर की जोर सं जै जै कार लगावांगा.....
 रुणीचा म्हे जावांगा दर्शन पावांगा
 दर्श करांगा आशीश देवं वो दयालु धणी
 राम सरोवर परचा बावढी बडी ही सुंदर बणी
 मेळो लाग हं जोर को चालो बाबो परचाधारी
 विपदा हरलेवं भगतां की बाबो नेजाधारी
 खीर चुरमो मेवा मिसरी लेकर जावांगा
 सब मील राजा रामधणी की ज्योत जगावांगा ढोल
 नगारा बाज रहया आपा झांझ बजावांगा
 खम्मा खम्मा गावांगा म्हे भजन सुणावांगा.....
 गोदुध शहद गंगाजल चांदी बरक ले जावांगा
 अरटगंध और गुलाबजल सं म्हे न्हुवावांगा
 कुंकुम केशर को माथा पं तिलक लगावांगा
 केशरिया जामो पेराकं हार पेरावांगा.....
 धोळी ध्वजा लहरावांगा जी इत्र चढावांगा
 घी को रोट चुरमो सागे भोग लगावांगा
 चोखो घी और तेल की म्हे भी लगावांगा
 राजु बोलं लुललुळ सारा धोक लगावांगा

तर्जः- ता रा रा रा

जै बाबेरी बोलोऽऽ
लीले घोडे वाले को सलाम मै भी करता
तुम भी करो सबको मालामाल करता
बोलो
जै बाबेरी जय बाबेरी बोलो ये निहाल
करता बोलो जै बाबेरी
भक्तों के सारे दुखडे थे हरता बोलो जै
बाबेरी जय होऽऽ

कोरस :- जै बाबेरी ६-६ बोलोऽऽ

रूणीचा मे है बसेरा लीले घोडेवाले का
लीले घोडे वाले का इस मैणादे के लाले
का
लीले पे ये चढता रंगीले पे ये चढता
भक्तों के संकट खुद हरता बोलो जै
बाबे री

रण मे जाओ बेडापार लगाता ये
सच्चे मनसे ध्याओ सही राह दिखाता ये
धुप नही मांगता ये दिप नही मांगता
ये तो अपने भक्तों से जयकारा मांगता
बोलो जै बाबे री

जीवन की नैय्या भैय्या पार लग जायेगी
जिंदगी में खुशीयो की बहार आजायेगी
फुल नही मांगता ये हार नही मांगता ये
तो अपने भक्तों से प्यार मांगता बोलो
जय बाबे री

तर्जः- रेशमी सलवार

रामधणी दातार बेगा आओना रामा
राजकंवार बेगा आओना
थारो भगत यो थानं बुलावं ओ रामसा
क्यों ना आओ
थारो जम्मो थानं सुणावं भले सुणताही
पांछा जाओ
आओ आजा ओना रामधणी सरकार बेगा
आओना

क्युं नहीं थे अबतक आया म्हानं सांची
सांची कहदो
थे नहीं आणो गर चाहो म्हानं सांची बात
बतादयो
थे हामी भरियोना सावरीया सरकार
आभी जाओना

जद बोयत टेर लगाई थे पलमं झाझ
तिराया
रतनो राई को बोल्यो तो पुंगळगढ
प्रगटाया
आज भी आओंना ज्योत जगी हं आज
रामा आओना

यो राजु थानं बलावं ओ रामधणी
आजाओं
नर नारी तरस रहया हं सै खडया दरश
दे जाओ
देर अब करीयो ना रामधणी सरकार

बेगा आओ

“स्वागतगीतल

किस्मत से शुभदिन आया रामरुणींचा
से चला आया सामने कोई पुण्य काम है
आया नेजाधारी ने दर्शन कराया चंदन
चौक पुराओ एक चौकी बिछाओ उपर
गालीचा लगाओ मेरे बाबा को बिठाओ
मनभावन मीत है आया राम रुणींचा से
चला आया आओ आलोकजी बाबा को
तीलक लगाओ अजितसींग जी आओना
फुलहार पहनाओ नेजाधारी ने दर्श कराया
राम रुणींचा से चला आया
आओ........................बाबा को कंटयार
पहनाओ
........................आओ तुर्रे किलंगी पेराओ
लीलाधारी ने दर्श कराया
राम रुणींचा से चला आया
आओ ....बाबा पे सुगंधी बरसाओ ...
.................आओना इत्र लगाओ
...............................आओ मेरे बाबा को
चादर चढाओ............................आओना ज्योत
जगाओ..........................आओ बाबा को गहने
पहनाओ आओ.......................आओना भोग
लगाओ आओ.........................बाबु भेंट

चढाओ किसमत वाला पास तेरे आया
रामधणीया से आशिश पाया
आओ भक्त सारे मिल करके आरती उतारो
राजा जगांवा थारो जम्मो जगांवा
तनमन सुं बाबा थानं मनांवा
ओ पीरजी पीरां का थे पीर बाबा हेलो सुणो
ओ बापजी धन हो रामापीर म्हारो हेलो सुणो
मारवाड गुजरात मं धणीया घर घर थानं ध्याव हो
थोंका रूणीचा मं नरनारी कठ कठ सुं आव हो
आओना बाबा ज्योत जगावां
खम्मा गांवा थानं रिझावा ओ पीरजी.....
.....
दाळ चुरमो मेवा मिसरी खीर पुआ म्हे खुवावांजी
धुम धडलको घणे करांगा मन की बातां बतावांजी
चरणामं थारे ीश झुकावां मनडा मं आनंद म्हे पांवा पिरजी.....

बाबा रामदेव अवतारी थांरी महिमा सब सुन्यारी
नाथ द्वारिकावाळा थारी महिमा सबसुं न्यारी रे
अजमलजी रा कंवरा थानं पुजं दुनिया सारी रे
गांव रूणीचा धाम आपणो जाणं दुनीया सारी

धोळी ध्वजा फरूखै बाबेरी शोभा सब सुन्यारी रे
राम सरोवर सामं थारी बणी समाधी न्यारी रे
कुंकुम पगल्या मांडया बापनी अजमलहार अवतारी रे
कपडे रे घोडलीयो उडायो महीमा अपरंपारी रे.....
आंधळीया ने आंख्या देवे पांगळीया चल आवे है,
बांझडीया न बेटो देवो निर्धनीयो धन पावं है
सबकी आस है बाबा कोई ना जावे खाली रे
रामदेव की महिमा प्यारी दास अशोक बताये जी
रजु थारा हर जस गावं चरणा शिश नवावे जी
छोड आसरो सगळा को मं आयो शरणे थारी रे

ध्वजा की महिमा

हो ऽ मरूधर देश नौ खण्ड माहीं बस्यो हं राजस्थान
उणरा तो सीरमोर है रामदेव भगवान
हां धोळी ध्वजा फरूखैं बाबारी दरशन सुं कल्याण
मरूधर माहीं चमक रह्यो जीं पगलीयारो हीं निशान
ये धोळी ध्वजा रामा की है जिनके तन केशरी जामा की
लहरादो भक्तोऽऽ फहरादो इसको मंदिर पे
होऽऽ ओऽ होऽऽ ओऽऽऽहोऽऽ ओऽऽ
जो पैदल चलकर आते है वहां धोळी ध्वजा फहराते है
रामा के दरपे होऽ बाबा के दरपे आते है वो मनवांछित फल पाते है
पचरंगी ध्वजा लहराता जो मनवांछीत फल भी पाता वो
मिल जाये बाबाऽऽ होय वो पांचतत्व पि जाता है बाबा का आशीश पाता है
गर जाना है बाबा के दर फहराओ ध्वजा हो जाओ निडर
जलता है दिपक ज्ञानी का मिटता है दुख अभिमानी का
फहराई ध्वजा जिसने भी वहां दुख भाग गये ना जाने कहां
धणीया की किरपा हाऽ य बाबा की किरपा होती है किस्मत भी दासी होती है
राजु कहता अजमाओ तुम बाबा की ध्वजा लहराओ तुम
लहराओ भक्तो मंदिर पे बाकी सब छोडो

बाबा पे

तर्जः- ये बंधन तो...
जब जब जिसने भी पुकारा बाबाने दिया सहारा
ये दुर नहीं है हमसे बस याद करो इन्हे मनसे
बाबा तो बडा ही प्यारा है हम सबका सहारा है

हमसे दुर नही है ये करता है रखवाली
जिसने भी किया भरोसा बाबा ने डोर संभाली
जो इनके पांव पकडले ये उसका हाथ पकडले.....बाबा.....

अपने भगत पे हमेशा ये दया किये करते है
ये उसको पार लगाये जो नाम लिया करते है
ये चार दिनों का जिवन बाबा को करदो अर्पण

कृपा जो इनकी हो तो हर मुश्कील भी टल जाये
जिवन मे जागे आशा और मंजील भी मिल जाये
कपडे का घोडा उडादे हर बंधन से छुडवादे.....

राजु कहता अवतारी ये सांचा परचाधारी
दिनों का नाथ दयालु है अजमल घर अवतारी
हर आफत से छुटकारा करे रामापीर हमारा

तर्जः-म्हान घोडलीयो
जागो राजा रामधणी अब जागो परचाधारी
कलीयुग रा अवतारी अब थे जागो नेजाधारी
चांदी की चौकी लगवाई ल्यायो जल की झारी
लाल अंगोछो दातुन ल्यायो कर दी सब तय्यारी
दर्पन केशर, गंध भी ल्यायो मुख देखण अवतारी

जागो राजा रामधणी अब जागो परचाधारी
चिडीयन को चिडचीडा भयो हं छिप गये सभी तारे
चंद्रकला सब मंद भई प्रभु सुरज भयो उजारे.....
आये भगत सब द्वार तिहार डालीबाई प्यारी
राजु कहे बलीहारी जी मैणादे मैय्या जागे परचाधारी दुध दुवावन हरजी आयो सागे सुगणा प्यारी देखो आई
राजु कहे बलीहारी अबतो जागो परचाधारी

कलयुग मे परचा खुब दिया मेरे राम रूणीचा वाले
अपने भगतो को तार दिया मेरे राम रूणीचा वालेने
राम रूणीचा वालेने खुद भक्तन के रखवालेने....
कुमकुम के पगले प्रगट भये अजमल को लाडलडानेको
मारा था भैरव राक्षस को इस राम रूणीचावालेने
व्यापारी एक विदेश गया लाखो का माल कमाने को
जल डुबत जहाज तिराय दिया इस राम रूणीचा वाले ने
बणजारे ने सत छोड दिया दमडी और नाम बचाने को
पलमे मिश्री का लुण किया इस रामरूणीचा वालेने

पोकरण के पास रूणीचा मे दुनिया आवे सब दर्शनको
भादो का मेला हद भारी भरवाया रूणीचावाले ने
कलयुग मे दाता देव तु ही भगतन के काज संवारनको
राजु को भक्ती प्रदान किया इस.राम रूणीचा वाले ने

अरजी थे म्हांरी सुणल्यो रूणीचे रा धणीया
आओना पधारो म्हारे आंगणीया जी मन भावणीया
अजमलजी रा कंवरा खम्मा खम्मा हो रमा रणुचेरा धणीया
आस और विश्वास लिया थारी बाट जोवं हुं
रामापीर आसी रे आसी करता दिनडा खोवु हुं
राता बितावं करकर जागणीया हो रमाऽऽ ..... अज.....

दिन बित्या राता बिती बाबा थाने टेरता
बरसांरा बरस बितग्या माला थारी फेरता
हातारी दुखन नं लागी आंगलीया हो रमाऽऽ.....अज.....

सारंगी □रीर बणग्यो मन एकतारो हं
दोनो ही सांजा रे धणीया यो ही एक सहारो हं
आओ म्हारा मनडा री मालारा मणीया हो रमाऽऽ.....अज...

कोरसः- आओ आओना रामा रणुचे रा धणीया
"लिले घोडो नवलखो ज्याको मोत्या जडी लगाम
रंणुचा का राजा आओ छोडो सारा कामल
भक्तांरी पुकार सुण रामापीर आयाजी
दास थांरा दर्शन पाकर अती सुख पायाजी
चरणां रो चाकर छोगालाल बणीया हो रामा.....
कोरसः- खम्मा खम्मा ओ रामा रूणीचे रा धणीया
मैणादे रा लाल पधा-या अजमालघर अवतारी
रामाराज कंवार पधा-या सांचा परचाधारी

रूणीचे रा राजा थानं घणी घणी खम्माजी
दो करोड तो म्हान दे दयो बाकी रखो जम्माजी
थे हो देवणीया म्हे हो लेवणीया

हो ऽऽ रूणीचा सुं रामाराज पधा-या सगला मील धोंक लगाओ जीओऽऽ

कोरसः- खम्मा 3 रे कंवर अजमालरा अंदाता रो पार नहीं
पांवा जीओ खम्मा रे कंवर अजमालरोऽऽ
जोई जोई ध्यावं वारां दुखडा यो काटं बापजी की महिमा न्यारी जीओ.....
हेऽऽ वारी वारी जाबं रे कंवर तपधारी ऽऽ

म्हारा बापजी की महिमा भारी जीओ
अरे आंधळीया न आंख्या देवं पांगळा न पांव जी
बाबो बांझडियारा पालणीया झुलावे जीओ
अरेऽऽघणी घणी खम्मा राजा रामदेव पीरने आया निकलकं नेजाधारी जीओ
आया कळजुग रा अवतारी जीओ सांचा परचाधारी जीओ
ऐ रणुचे ना राजा अजमालजी ना बेटा
बिरमदे ना बीर राणी नेतलदे ना भरतार म्हारो हेलाऽऽ
जी म्हारो हेलो सांभळो ओऽऽ रामापीर ओजी ओ म्हारो
हेलो सुणीजो रामापीर जीऽऽ
ऐ गुजराती वाणीयो जातरा ए जाय
मालदेखी सामटो चोर वासे ढाय म्हारे हेलो.....
ऐ उंची उंची झाडीया वच माथे मोर
मारी न्हांक्यो वाणीयाने माल लईग्या चोर म्हारो.....
ऐ उभी उभी अबला करे चेक पुकार
सोगढे रमता रामदे ने काने गयो आवाज म्हारो...
ऐ लीलुडो थो घोडलो हाथ माचे तीर
वाणीयोने वारे चढीया रामदेव पीर म्हारो..
.
ऐ उठ एठ वाणीयां ने धड ने माथो जोड
त्रणभुवन माथी □ोध लावुं चोर म्हारो...
ऐ भागो भागो चोरटा केट लेक जावो
वाणीया नो माल तमे केटला दाडा खावो..
...
ऐ आंखे करू आंधळो डील्लु काढु कोड
दुनीया जाणे के पीर रामदे नो चोर..

ऐ गाय दल्लु वाणीया न भल्ली राखी
टेक
रणुचा ना राज मा पेरी लीधो भेरव म्हारो.
.....

रे घोडो जोरको घुमायो रे अजमललाला
अजमल लाला रे लीले घोडेवाला २ रे
घोडो ३

अरे इणरे घोडे री चाल म्हे तो पुंगळगढ
मं देखी
रे झगडो पडिहार सु जित्योंजी अजमल
लाला
अरे इणरे घोडे रीचाल म्हे तो जोधाणा मं
देखी
गढ का कांगडा तुडवायाजी अजमल
लाला

अरे इणरे घोडे री चाल राजो खुद
हकिम भी देखी
चणा तो लोहा का चबवायोजी अजमल
लाला

अरे इणरे घोडे री चाल उडु का मीर
माही देखी
रूपा नं कालकोठडी छुडवायो अजमल
लाला

अरे हरी रे ारणां मं भाटी हरजी एकही
बोल्या
ओ बाबा पत म्हारी भी राखजो अजमल
लाला

म्हानं घोडलीयो मंगवादे म्हारी मॉ म्हाने घोडलीयो मंगवा
घोडे चढने घुमण जायुं २ घोडलीयो मंगवा म्हारी मॉ

बालपणे मं रामदेवजी हठ किनो हद भारी
कैसो हठ पुंरू रे बालक सोच रही महतारी
अरे किंकर इणने मं समझाबं लाग रही मन मं चिंता

मैणादे सुगणा रे साथे दरजी नं बुलवावं
रामदेवरे खातिर कपडे रो घोडो बणवावं
अरे दरजी मनमं लालच किनो भितर गुदडी भर दिनी

रंगरगीलो लीलो घोडो बालक रे मनभावे
अरे लिनी लगाम हाथ बापजी मनमाही मुसकावे
एड लगाई घोडलीया ने रामदेव आकाश

उडया

जादुरो घोडलीयो म्हारे दरजी घडने ल्यायो
अरे मातपीता मनमं घबरावे दरजी कैद करायो
दरजी बिणत करवा लाग्यो रामदेवजी कथ ह-या
दरजी नं परचो दिखलायो रामदेव अवतारी
दास अशोक सुणावं बाबा अरजी सुणल्यो म्हारी
अरे हिवडां मं संतोश दिराओ राम रूणीचे राधणीया

अरे कांई माल थारी बाळदमं बिणजारा रे
म्हानं सांचो भेद बताय दयो बिणजारा रे

अरे पुछं बाबो रामदेव बिणजारा ने
थारो कंय्या चले ब्योपार ओ बिणजारा रे

अरे पेट गुजारी होय रह्यी अनदाता हो
बडो सुंदर चलं बेपार ओ अनदाता रे

ओ बिणज करूं मं लुण को अनदाता रे

म्हारी बाळद भरी हं लुण की जाबंजी

अरे जैसी जांकी भावना बिणजारा रे
वो वैसा ही फल पायसी बिणजारा रे

अरे झुंठ बोल्यो आपसुं अनदाता हो
म्हारो गुन्हो कराय दयो माफ हो अनदाता रे

ओय पुनमचंद चरणा पडयो बिणजारा ओ
धणी लुण री मिशरी बणाय दी अनदाता ओ

महीमा गांवा रामदेव री सुणजो ध्यान लगाय
जनम जनम रा पाप मिटे और दुख दाळीध्दर जाय
बाबा रामदेवजी ओ थानं खम्मा घणी अजमालजी रा कंवरा थानं खम्मा
हे मरूधर रा हो देव थारी ध्वजा फरूखै सारे देशमां
हो साचा मनसुं ध्यावं उणरो जनम सफल होवं देशमां
माता मैणादे रा लाल थानं खम्मा घणी

श्री रामदेवाय नमः

ओं अजमल सुताय नमः
ओं मैणादे नयनानंदाय नमः
ओं द्वारका नाथाय नमः
ओं रणसीजी पौत्राय नमः
ओं श्रीनाथाय नमः
ओं क्षीसिन्धुवासिने नमः
ओं श्री रणछोडाय नमः
ओं सकल क□टभंजनाय नमः
ओं दारिद्र हारिणे नमः
ओं दुःखनाशिने नमः
ओं परात्पराय नमः
ओं भक्ताधीनाय नमः
ओं भक्त प्राण प्रियाय नमः
ओं मोदक प्रहार सहनाय नमः
ओं अजमल वर दात्रे नमः
ओं अजमोर्ाराय नमः
ओं अजमल पु□ प्रदाय नमः
ओं अभयांचल दात्रे नमः
ओं रतन कटोरा प्रदाय नमः
ओं वीर गेडिया प्रदाय नमः
ओं अमलडावली प्रदाय नमः
ओं बिरमदे लघुभ्रात्रे नमः
ओं शिरसि पट्टिका वन्धनाय नमः
ओं मेणादे स्वप्न दर्शनाय नमः
ओं पालनाशयिने नमः
ओं विरमदेव नखक्षताय नमः
ओं मायारुप धारिणे नमः
ओं अजमल ह□ी बर्धनाय नमः
ओं मेणादे सुख प्रदाय नमः
ओं लिलडे अश्वाय नमः
ओं अश्वारोहिणे नमः
ओं राम कुंवराय नमः

ओं चमत्कारिणे नमः
ओं सखा मनो विदाय नमः
ओं कन्दुक प्रक्षेपनाय नमः
ओं श्री बालीनाथ शि□याय नमः
ओं वीररुप धारणाय नमः
ओं गुरोराज्ञा पालनाय नमः
ओं भैरव राक्षस मर्दनाय नमः
ओं भैरव भोजन दात्रे नमः
ओं रूणीचा ग्राम स्थापनाय नमः
ओं रूणीचाधीशाय नमः
ओं बोयता रक्षणाय नमः
ओं अन्नक्षेत्र स्थापनाय नमः
ओं लाखा असत्य मोचनाय नमः
ओं जंभामान मर्दनाय नमः
ओं रामसागर निर्माणाय नमः
ओं स्वारथीया प्राण दात्रे नमः
ओं पंचपीर चमत्कार प्रदर्शनाय नमः
ओं सोढा जामात्रे नमः
ओं नेतलदे पतये नमः
ओ दलाजी □ोक नाशाय नमः
ओं ब्राम्हण दुःख विनाशाय नमः
ओं सुगणा भात्रे नमः
ओं सुगणा वस्त्र प्रदाय नमः
ओं सुगणा प्राण रक्षकाय नमः
ओं सुगणासुत प्राण प्रदाय नमः
ओं तस्कर बधाय नमः
ओं दल्लासेठप्राणदात्रे नमः
ओं तुवरलाज रक्षकाय नमः
ओ मारजारिका प्रदर्शकाय नमः
ओं स्वश्रुःपरिचयदात्रे नमः
ओं गो प्राण प्रदाय नमः
ओं रामपीराय नमः
ओं डाली बाई मुठिं प्रदाय नमः

ओं समाधि धारिणे नमः
ओं हरबुजी दर्शन प्रदाय नमः
ओं रतनपात्र मात्रे प्रदाय नमः
ओं विरमदे वीर गेडिया प्रदाय नमः
ओं दीन जन आãन श्रवणाय नमः
ओं अभयांचल अर्पणाय नमः
ओं अमल कुसुम्बा पानाय नमः
ओं नेत्रदात्रे नमः
ओं पुत्रदात्रे नमः
ओं गलित कु□टनिवारणे नमः
ओं मूक वाक प्रदाय नमः
ओं पंगु पग प्रादत्रे नमः
ओं भक्त मनोरथ पूर्णाय नमः
ओं कंचन काया प्रदाय नमः
ओं उगमसी पुत्रा प्रदाय नमः
ओं हरजी दर्शन प्रदाय नमः
ओं अजा दुग्धपानाय नमः
ओं हरजी वर प्रदाय नमः
ओं हाकम हजारीमान मर्दनाय नमः
ओं वस्त्राश्व अभी□ठाय नमः
ओं हरिजी कारागार मुक्तकराय नमः
ओं धारूजी पुत्र प्राण प्रदाय नमः
ओं तुंवरवंश □ाप प्रदाय नमः
ओं साधुवेश धाराय नमः
ओं निकलंकाय नमः
ओं नेजा धारिणे नमः
ओं रावलमान खंग स्तम्भनाय नमः
ओं रूपादे प्राणत्राणाय नमः
ओं खंग धारिणे नमः
ओं चंद्रावलि प्राणदात्रे नमः
ओं भक्त वत्सलाय नमः
ओं अछुतोद्धारणाय नमः
ओं जगमल जीवित कराय नमः

100.ओं जैसल भक्ति प्रदाय नमः
101.ओं तोरल भक्ति वर्द्धनाय नमः
102.ओं सौंसतिया ज्ञान दात्रे नमः
103.ओं सधीर मोक्ष पथप्रदर्शकाय नमः
104.ओं पश्चिम दिशा धोशाय नमः
105.ओं सोनिन चक्षु प्रदाय नमः
106.ओं सर्व दुःख निवारणाय नमः
107.ओं भक्त जनहिताय नमः
108.ओं भक्त मनोरथ पूर्ण हिताय नमः

श्री गणेशाय नमः ।
।।श्री रामदेव पंचकम्।।

आदौ अजमलगेंह पुत्र जननं, अवलौक्य माता सुतम् ।
पालनायां □ायनं कृतौ दौ सुतौ जाता महा बिस्मिता ।
दृ□टा दुग्धमधः पतन त्वरितया हस्तेन् संशोधितम् ।
वंदे तं मायापति प्रभु हरिं नेतल पतिः पाहिमाम् ।।1।

ग्रामे पोकरणे कृतं निवसनं मित्रेण सह किडनम् ।
क्षिप्त्वा कंन्दुक लीलया तद् बनें यत्र स्थित भैरवः ।
बालीनाथ गुरूं च तत्र दृ□टा प्रेम्ण प्रह□ान्मनः ।
वन्दे तं मायापति प्रभु हरिं नेतल पति पाहिमाम ।।2।।

हत्वा राक्षस भैरव प्रभु हरिः आज्ञा गुरूः पालनम् ।
कृत्वा नाम रूणीचा दिव्य नगरं वैश्यस्य रक्षा क्लतः ।
लाखाः मिश्री पदार्थ लवणं कृत सत्ये मति स्थापितः ।
वन्दे तं मायापति प्रभु हरिं नेतल पतिः पाहिमाम ।।3।।

भक्तानां दुःख नाशनंच श्रुत्वा आगत्य तव सन्निधौ ।
अजन्मात कृतं अघं प्रतिदिनं कृतवा बृहद् पोटलम् ।
उपहारं च ददामि तव चरणयोंः नान्यत् मया अर्जितम् ।
वन्दे तं मायापति प्रभु हरिं नेतल पतिः पाहिमाम ।।4।।

श्री रामदेव चरणौ मनसास्मरामि , श्री रामदेव चरणौ वचसा गृणामि,
श्री रामदेव चरणौ शिरसा नमामि, श्री रामदेव चरणौ □ारणं प्रपद्ये ।।5।।

श्री रामदेव पंचकमिदं पठति प्रभाते, बद्ध्वा´जलि च कृत्वा नत मस्तकेन दुःख भय रोग विमुक्त भूत्वा सः मोदते प्रति दिनं रामा प्रसादात् ।।6।।

श्री रामदेव गायत्री
अजमल सुताय विदमहे ।रामदेवाय धीमहि,
तन्नों तंवर प्रचोदयात् ।।

श्री रामदेवजी की स्तुतिः
श्री रामदेव कृपाल भजमन, हरण भव भय दारूणं ।
अजमल घर अवतार आप, संसार सागर तारणं ।।

कर्ण कुण्डल अश्व वाहन, पु□प माल गल □ोभितं ।
कर में भाला पीत जामा हरजी चंवर ढुलाविंतं ।।

भव क□ट भंजन भक्त रंजन, भैरव दैत्य निकंदनं ।
भज दीन बन्धु दिनेश बारम्बार करत सुवंदनं ।।

जगत पाल कृपाल आनन्द, कंद अजमल नन्दनं ।
□ाक्ति सागर गुण उजागर, अलख आप निरंजनं ।।

वय ताप टारन करत दर्शन, चरण प्रतिदिन पूजितं ।
मम दिव्य दृ□ट प्रदान करू, रोगादि दुःख दल गंजनं ।।

तर्जः— म्हानं घोडलीयोहो

अब जागोना रामदेव महाराजा देखो भोरभई
अखीयॉ तरसे दर्शनताई डाली पहुंच गई

हरजी चंवर ढुलावे बाबा करं घणी ही घाई
गंगाजल झारी मं भरकं उभी डाली बाई
लाल अंगोछो दातण लेकं ऽऽ सुगणा आय गई.....हो अब.
.....
पंछी को चहचहाट भयो हं कोयल कर हं ाोर....
ता ता थै ुया नाच करदं देखो कतरा मोर.....
अब ना देर लगाओ दाता ऽऽ अखीयॉ तरस गई.....

न्हाय धोय त ुयारी करल्यो नेतल जोवं बाट
चरणामृत लेवण कं खातर उभो कीसनो जाट
घी दुध मीशरी ाहद दही लांछा ले आय गई.....

अटगंध कुंकुम इत्तर ले जुगणी खातण आई
रंगबीरंगा फुल हार ले मालण पहुंच गई
चोखा घी को चुरमो लेकं जाटनी आय गई

पशुआ तणा बंधन सब छोडया गÅ बछडा को मेल
हुयेाजी
अपणा अपणा काज करां गे—या दिपक मं तेल घी घणो
भाव भक्ती की ज्योत जगांवा ध्यान की टेम हुई
राजु की अर्जी सुण उठ जो सांचा परचाधारी
मीठा मीठा भजन सुणाÅ सुणलीजो अवतारी
पुरी करजो आस मं हरदीन अरजी करूं नई

बीना हुकम पत्तो नही हालं थेई हलावनवाला उठोजी रामरूणीचे वाला

थे उठया बीन कं ुया सरसी भगतां का रखवाला उठोजी रामरूणीचे वाला

जाग्या रामजी जाग्यो लछमन जागी सीतामाई जी देखो
प्रेम भगत सुदामा जाग्यो जागी जसोदा माई जी देखो
राधारानी जागी 2 हो बाबा ऽऽ सतभामा जाग गई.....
तांबा को लोटो जळ भरकं ल्यायो दया निधान .....यो राजु
खोळुं परदो भुल चुक मेरी माफ करो भगवान दयाळु माफ करो भगवान
राजु थारे चरणां को चाकर हो ऽऽ केंवं राजु डोर धिरज की म्हांकी टुट गई.....

ुभ दृटी कर देखो ध्वजाबंद चरण मं छोडु नाई जी थांका
ारणे आया की लाज राख दयो परचा पल माही 2 थे देओ
कलम राखजो म्हारी ओ बाबा छोड ऽऽ या अरजी हं धणीया तांई
दिन बन्धु थे दिनानाथ हो सारी बाता जाणो
पीरा का थे पीर कुहाओ मन की बात पिछाणो
लाज राखजो राजु की थे इ कलजुग माई

ßधाम घणा ही देख्याजी पर रूणीचासे धाम नही
इ□ट देव जो थानं समझं अटकं कोई काम नहीÞ

बाबा धाम रूणीचो थारोजी,
सब धामं सुं धाम यो म्हानं लागे प्यारेाजी
लागे प्यारो जी म्हानं लागे प्यारोजी.....बाबा.....

जठे बीराजे म्हारो देवता नाम रामसापीर
पीर घणा ही देख्याजी पर यों पीरां का पीर
हिंदु मुस्लीम भेद मिटायोजी सब धामांसुं.....

जठे रामसा लीनी समाधी मंदिर बण्यो विशाल
लागे मेळो बहोत ही भारी भादो मं हरसाल
देवरो सुंदर बण्यों हं थाराजी सब धामांसुं.....

रूणीचा मं रामदेव को सांचो हं दरबार
बनवारी जो सांचा मनसुं ध्यावं बेडोपार
राजु थानं ही तो चावंजी, रूणीचा को रामदेवजी लागे प्यारोजी

बाबा की किरपा जिसमें हो जाये वो मौज उडाये
चाहे गरीब हो यांके अमीर हो
चाहे बुरी से बुरी उसकी तकदीर हो
बाबा दयालु सबको निभाये वो.....

पितल का सोना कंकर का मोती
बन जाये पलमे किरपा जो होती
पलमें करिश्मा करके बताये.....

बाबा के बेटे दु:ख नहि पाते
बनवारी हरदम खुशीया मनाते
भक्तोंका दु:खा ये पलमे मिटाये.....

कृपा मुझपर भी हो जाये अगर तुम दर्श करा जाओ
मेरी जिंदगी संवर जाये अगर तुम मिलने आजाओ

मेरे जिवन के गुलशन पर बहारों की खिंजा छाई
ये मौसम भी बदल जाये अगर तुम.....

बला हर एक दिन आती के गफलत मे मै जिता हुं
तमन्ना फीर मचल जाये अगर तुम.....

झलकते आंख के आंसु कही बेकार ना जाए
कटे सारे ही भव बंधन अगर तुम.....

है ये राजु की भी अरजी रहे मुझपे तेरी मर्जी
जो समझे दिलके भावों को अगर तुम.....

पिछम धरारां बादशा हे ऽऽऽ रामाराजकंवार
कोरसः— खम्मा 3 हो कंवर अजमालरा 2
थानं तो पुंज राजस्थान जिओ गुजरात जिओ
हो रामा घणी घणी खम्मा राजा रामदेवजी पीरनं

गायकः— हो राजा घणी घणी खम्मा राजा रामदेव पीरनं

अजमल जी कियो राणीसुं धनधन भाग हमारा जी
द्वारकानाथजी म्हारे घरमे देखो आय पधा—या जी
कुमकुम पगल्या मांड प्रभुजी अजमल जी ने दिखलाया
द्वारिकानाथ ने देखके ऽऽऽ—2 अजमल मन ही मन मे ह□ार्या
थानं तो पुजं.....रामदेव पीरनं

दुध पिलाती मैणादे री मनमे या □ांका आई
स्वामी कहे अवतार इणने क्या इसमे है सच्चाई
दुध उफणतो दियो उतार बात जाण करके मनकी
मैणादेरी □ांका मिट गई ऽऽऽ —2 देख के लिला भगवनकी
थानं तो पुजं.....रामदेवपीरनं

मैणादेरी आज्ञासुं दर्जी ने घोडो बणा दियो
गमत जमत मे रामदेवजी चढ घोडे ने उडा दियो
अजमलजी ने जादु समझ्या दर्जी जेल मे डाल दियो
सच्चाई जद खबर पडी तो ऽऽऽ .2 उण दर्जी को माफ कियो,
थानं तो पुजं .....रामदेवजी पीरनं

बालीनाथ रे मठ दानव ने रामदेव ढुंढण पहुच्या
दानव देख गुरूजी बोल्या गुदडी रे निचे छुपजां
खेच खेच गुदडी जब थांक्यो डरके भैरू भाग गीयो
भार उतरीयो भूमी परसु ऽऽऽ —2 जद दानव संहार कियो

चुंगी चोरी करके लाखेा मनही मनमे ह□ार्यो
मिसरी सु जद लुण हुयो थो खुद रे झुठ पे पछतायो
वापस आयने माफी मांगी चरण कमलसु लिपट गयो
रामदेवजी लुण ने पाछो SSS –2 मिसरी मे फिर बदल दियो
थानं तो पुजं ..... रामदेवजी पीरनं

पाचो पीर बोल्या मक्कारा करण लग्या जब वे भोजन
भूल्या म्हे मक्का मे कटोरा ल्या दो थे म्हारा बर्तन
रामदेवजी हाथ उठायो बर्तन उठकर के आया
देख के थारी अद्भूद माया SS –2 पीरा थारा गुण गाया
थानं तो पुजं .....रामदेवजी पीरनं

पिछम दिशासु धन भ्हेळो कर बिच समंदर जद आयो
नाव फसी जद आय भंवर में बणियो तब हेलो पाडयो
भीड पडी जद भक्त रे उपर आपही प्राण बचायो जी
चौसर रमता हाथ बढायो SSS –2 बेडा पार लगायोजी
थानं तो पुजं .....रामदेवजी पीरनं

भौजाई जद रामदेवने मा–यो तानो यो म्हारी
गायरेा बछडो म–यो पडयेा है बण्या फिरो थे अवतारी
जिवीत करके बछडो पणने महिमा निजरी दिखलाई .....
...
भैजाई री बांझपणेरी SSS – सुनी बगीया महकाई
थानं तो पुजं .....रामदेवजी पीरनं

बिणती सुणकर रामापीरकी जांभेा रूणीचे खुद आयो
बोल्यो म्हे तो मीठे जळरो एक सरोवर बणवायो
सबक सिखायो द्वारकेश जी मान खंड कर जांभारो
सरोवर को जल रामदेवजी SSS –2 पलमें कर डाल्यो खारो,
थानं तो पुजं .....रामदेवजी पीरनं